अप्रैल, 2022 ■ वर्ष : 67 ■ अंक : 07 ■ पृष्ठ : 32 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

मातृहृदया का चले जाना...

"साध्वीप्रमुखा ने मानवता की सेवा के लिए अर्पित कर दिया जीवन"

राष्ट्रपति समेत अनेक हस्तियों ने साध्वीप्रमुखा के महाप्रयाण पर जताया शोक

अणुव्रत आन्दोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी
की अनुपम कृति और भाष्यकार

श्रद्धेया साध्वीप्रमुखा
महाश्रमणी श्री कनकप्रभा जी
के महाप्रयाण पर

अणुव्रत परिवार की सादर श्रद्धांजलि

राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द :
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अध्यात्म, दर्शन और साहित्य में सराहनीय योगदान किया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा और उत्थान के लिए अर्पित कर दिया। उनका जीवन हम सभी को समाज और देश की नि :स्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करता रहेगा।

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह :
साध्वीप्रमुखा अध्यात्म की विशिष्ट साधिका थीं। उन्होंने अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों से भारत का गौरव बढ़ाया। उनके जीवन के आदर्श समाज तथा राष्ट्र को श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों एवं पवित्र जीवन के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

आचार्य शिवमुनि :
साध्वीप्रमुखा का जीवन संयम, स्वाध्याय, जप, तप, गुरुभक्ति से परिपूर्ण था। उन्होंने साध्वी समुदाय एवं समणी समुदाय को अनुशासित करते हुए वीतराग मार्ग पर आगे बढ़ाया।

महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी :
साध्वीप्रमुखा जी ने पाँच दशक से अधिक समय तक छह सौ से अधिक साध्वियों का कुशल नेतृत्व कर नारी शक्ति का गौरव बढ़ाया। उनका व्यक्तित्व विलक्षण गुणों से मंडित रहा। मानवता की इस मसीहा को मानवजाति सदा याद करती रहेगी।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला :
साध्वीप्रमुखाजी ने अपनी अद्भुत ऊर्जा, विद्वता और साहित्य सृजन से विश्व में ज्ञान का प्रकाश किया। साध्वीप्रमुखाजी के पदारोहण की 50वीं जयंती पर उनके बारे में निकट से जानने का अवसर मिला। उनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद मानव सेवा के पथ पर आगे बढ़ने को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल :
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के महाप्रयाण का दु :खद समाचार मिला। नयी दिल्ली में दिवंगत पुण्यात्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किये। ईश्वर दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत :
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की एक साध्वी के रूप में छह दशकों की जीवन यात्रा तीन आचार्यों के सान्निध्य में पूर्ण समर्पण और त्याग से गुजरी, जिसकी दिव्यता उनकी अंतिम सांस तक परिलक्षित रही। उनके प्रवचन, उनका साहित्य, उनका आशीर्वाद एवं उनका त्याग भावी पीढ़ियों का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

लोकसभा सांसद एस. एस. अहलूवालिया :
साध्वीप्रमुखा का अध्यात्म, दर्शन और साहित्य में अमूल्य योगदान है। उनका लिखा महाकाव्य 'यात्रा ग्रन्थ' हिन्दी साहित्य की महान पुस्तकों में मान्यता प्राप्त है। समाज और देश की नि :स्वार्थ सेवा के लिए उन्हें सदा याद किया जायेगा।

गुजरात के गृह राज्यमंत्री हर्ष संघवी :
शासनमाता ख्याति प्राप्त साहित्यकार थीं। उन्होंने 50 से अधिक पुस्तकें लिखीं तथा आचार्य तुलसी लिखित 100 से अधिक पुस्तकों का सम्पादन किया। साध्वीप्रमुखा का जीवन हम सभी को समाज और देश की नि :स्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करता रहेगा।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल :
साध्वीप्रमुखा ने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा और उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उनका जीवन हम सभी को समाज और देश की नि :स्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करता रहेगा।

ग्रामीण विकास राज्यमंत्री प्रदीप जैन 'आदित्य' :
साध्वीप्रमुखा ने तीन आचार्यों के शासनकाल में सकुशल प्रशासन, गहन जनसम्पर्क, धर्म-आराधना और साहित्य लेखन आदि गतिविधियों से भरपूर जीवन के चरमोत्कर्ष को प्राप्त किया। धर्मसंघ को उनकी अमूल्य सेवाएं स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगी।

आचार्य तुलसी जी
भारतीय सन्त–परम्परा में
विशिष्ट कोटि के सन्त हैं।
आप द्वारा
मानव–कल्याणकारी प्रवृत्ति
धर्म की सुरक्षा के लिए
संबल है।
भगवान बुद्ध और महावीर
की समकालीन परम्परा
आज भी जीवंत है।
उनके उपदेशों को
जन–जन तक पहुँचाने
का प्रयास सफल हो।

–दलाई लामा

वर्ष 67 • अंक 07 • कुल पृष्ठ 32 • अप्रैल, 2022

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

संयोजकीय टीम

प्रमोद घोड़ावत (संयोजक, प्रकाशन), **शांतिलाल पटावरी** (संयोजक, पत्रिका प्रसार)
ललित गर्ग (संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच), **रजनीकांत शुक्ल** (सह संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच)
इन्द्र बैंगानी (संयोजक, समाचार संपादन)

टाइपसेटिंग व लेआउट – **मनीष सोनी** कवर क्रिएटिव – **आशुतोष रॉय** चित्रांकन – **मनोज त्रिवेदी**

कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	– ₹ 50	₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।
एकवर्षीय	– ₹ 600	
त्रैवर्षीय	– ₹ 1500	
पंचवर्षीय	– ₹ 2500	
दसवर्षीय	– ₹ 5000	
योगक्षेमी (15 yrs.)	– ₹ 11000	

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन सदस्यता हेतु::

https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- *anuvrat.patrika@anuvibha.org* पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

❊ **उपवास, साधना और स्वास्थ्य** 06
आचार्य तुलसी

❊ **शिक्षा का नया आयाम** 08
आचार्य महाप्रज्ञ

❊ **अणुव्रत : एक राजपथ** 11
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

श्रद्धासुमन

❊ **असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री...** 17
आचार्य महाश्रमण

❊ **कैसे भूलूं क्यों भूलूं** 21
पदमचंद पटावरी

❊ **प्रेरणा और पुरुषार्थ की दीपशिखा** 22
डॉ. दिलीप धींग

❊ **प्रेम और ममता की प्रतिमूर्ति** 23
डॉ. महेन्द्र कर्णावट

❊ **विचक्षणता एवं विनम्रता की देवी** 25
डॉ. सोहनलाल गांधी

कविता

❊ **क्षमा उचित व्यवहार** 10
सीताराम गुप्ता

❖ **संपादकीय** 05

❖ **अणुव्रत काव्यधारा** 22

❖ **ईको-फ्रेंडली होली** 29

सम्पादकीय...

मातृहृदया का चले जाना...

अणुव्रत आंदोलन का यह विशिष्ट सौभाग्य रहा है कि इसका प्रवर्तन एक आध्यात्मिक संत के दूरदर्शी और समदर्शी चिंतन की फलश्रुति बना। जिसकी बुनियाद में मूल्यों का सत्व समाहित हो, वह आंदोलन अपनी प्रभावशीलता और सुदीर्घता के प्रति आश्वस्त रह सकता है। अणुव्रत आंदोलन को अपनी सात दशक की यशस्वी यात्रा में आध्यात्मिक नेतृत्व का संपोषण व संरक्षण निरंतर मिला है। आचार्य तुलसी का तो यह मानस पुत्र था ही, उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत की भावभूमि और कर्मभूमि को विस्तार दिया। अनेकानेक साधु–साध्वियों ने धर्म संप्रदाय के दायरे के बाहर आकर, इस सार्वजनीन विचार को सींचन दिया।

अणुव्रत आंदोलन की इस गौरवशाली परंपरा को जब करीब से देखते हैं तो एक ऐसा विरल व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है जो इस सम्पूर्ण यात्रा का न केवल साक्षी बना वरन अणुव्रत दर्शन के साथ एकात्म हो कर इसके विकास और विस्तार का वाहक बना। वह है साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का विरल व्यक्तित्व। आचार्य तुलसी के समय से ही वे अंतरंग बहुश्रुत परिषद् की सदस्य रहीं। आचार्य तुलसी की चिंतन यात्रा में वे सदैव प्रमुख सहयात्री रहीं। 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' ग्रंथमाला, जिसका संपादन साध्वीप्रमुखाजी की कुशल लेखनी से हुआ, आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त का अद्भुत दस्तावेज है। इन ग्रंथों में प्रकाशित आचार्य तुलसी की दैनंदिनी से संदर्भित अणुव्रत आंदोलन से जुड़े अनेकानेक संस्मरण उस स्वर्णिम इतिहास के दुर्लभ प्रसंग हैं।

साध्वीप्रमुखाजी का चिंतन और प्रशासन, उनकी लेखनी और वक्तृत्वशैली, उनकी साधना और संयमशीलता, मानो एक व्यक्ति में अनेक विशिष्टताओं का दुर्लभ समवाय था। आज जब वह विराट व्यक्तित्व हमारे मध्य नहीं है, उनकी अनुपस्थिति एक शून्य–सा उपस्थित कर रही है। अणुव्रत आंदोलन और अणुव्रत कार्यकर्ता मातृहृदया के वात्सल्य, प्रेरणा और प्रोत्साहन से अपने आप को वंचित अनुभव कर रहे हैं।

'अणुव्रत' का अंक हम उन्हें प्रतिमाह भेंट करते, तो वे उसे बड़ी रुचि से देखती थीं, कुछ पृष्ठ पढ़ती थीं और अपना आशीर्वाद प्रदान करती थीं। उन्होंने 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' ग्रंथमाला से अणुव्रत के प्रसंगों का संकलन करने की प्रेरणा दी थी जिसे हम यथाशीघ्र पूर्ण करने का संकल्प व्यक्त करते हैं। अणुव्रत विश्व भारती, समस्त अणुव्रत समितियां और अणुव्रत आंदोलन से जुड़ा हर एक कार्यकर्ता महाश्रमणी श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाजी की पावन स्मृति को शत–शत प्रणाम करता है और उनके आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना करता है। मैं पिछले लगभग 45 वर्षों से आपके आशीर्वाद का पात्र बना रह सका, इसे अपना व्यक्तिगत सौभाग्य मानते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

सं.जै.

sanchay_avb@yahoo.com

आशाओं के दीप जले जब
थी फैली अंधियारी रात,
रोम–रोम होता था पुलकित
ज्यूं शीतल जल का हो प्रपात।

शासन को मातृत्व भाव से
सींचा था निशि दिन सांझ प्रात,
रेख कनक सम खींची ऐसी
जननी हुई जगत प्रख्यात।

कला शिल्प का कौशल दुर्लभ
कलम जगत में थी विख्यात,
भाव, शैली व शब्द समन्वय
विरल विभूषित थी सौगात।

हुई प्रशिक्षित आत्मसाक्षी से
गुरु तुलसी का पा वरद हस्त,
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा यूं
चमकी चहुं दिश यश प्रशस्त।

अणुव्रत के दर्शन को तुमने
जीया और किया आबाद,
नतमस्तक कृतज्ञ राष्ट्र यह
युग–दर–युग रखेगा याद।

उपवास, साधना और स्वास्थ्य

आचार्य तुलसी

साधना के मार्ग में संयम की अनिवार्यता है। संयम के अभाव में साधना प्रभावशाली नहीं हो सकती। अणुव्रत–साधना केवल व्यवहार–शुद्धि के लिए ही है, मैं इस तथ्य से सहमत नहीं हूँ। अणुव्रत के लक्ष्य निर्धारण में आत्म संयम और नैतिक मूल्यों की स्थापना सहज प्राप्त है, इसलिए संयम की बात अधिक मूल्यवान है। उपवास में इन्द्रिय–संयम सधता है और आत्मा की सन्निधि प्राप्त होती है। उपवास में कुछ करना नहीं होता, केवल छोड़ना होता है। छोड़ना ही आत्म–निकटता है।

मनुष्य प्रवृत्ति–बहुल प्राणी है। प्रवृत्ति का पहला या प्रमुख अंग है खान–पान। मनुष्य को भूख–प्यास न लगे तो बहुत–सी प्रवृत्तियां स्वयं कम हो जायें, पर भूख नैसर्गिक है, इसे टाला नहीं जा सकता। भूख से आर्त व्यक्ति स्थिर नहीं रह सकता। स्थिरता के बिना विशेष साधना की तो बात ही क्या, सामान्य काम भी उचित ढंग से सम्पादित नहीं किये जा सकते। इसलिए प्रवृत्ति जीवन की अनिवार्य अपेक्षा बन जाती है। प्रवृत्ति का मूल हैं इन्द्रियां। इन्द्रियों की प्रेरणा से मन में भटकन होती है। मन की भटकन ही आत्म–विमुखता है। आत्मोन्मुखता के लिए मन का केन्द्रीकरण अपेक्षित है। मन की एकाग्रता इन्द्रिय–संयम से निष्पन्न होती है। इन्द्रिय–संयम का मुख्य हेतु खाद्य–संयम है। खाद्य–संयम से आत्म–शोधन होता है और आत्म–शोधन का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहारों पर पड़ता है। इसलिए भोजन न करने और भोजन की मात्रा के अल्पीकरण का महत्त्व है।

उपवास का अर्थ है निकट रहना। तात्पर्य है आत्मा की निकटता में रहना। भोजन छोड़ने से प्रवृत्तियां कम होती हैं। वे जितनी कम होंगी, आत्म–निकटता उतनी ही बढ़ती जायेगी। आत्म–विकास की अन्तिम स्थिति में जहां प्रवृत्तियां सर्वथा समाप्त हो जाती हैं, आत्म–स्वरूप अनावृत्त हो जाता है, वहां केवल आत्मा का ही अस्तित्व शेष रहता है।

उपवास करने वाले व्यक्ति अनेक दृष्टियों से अपना हित साधते हैं। धार्मिक या आध्यात्मिक लाभ के साथ स्वास्थ्य–शास्त्रीय, समाज–शास्त्रीय और अर्थशास्त्रीय दृष्टि से भी उपवास का महत्त्व सिद्ध होता है। आध्यात्मिक अर्थ में उपवास का अर्थ केवल भोजन छोड़ना ही नहीं है। भोजन के साथ और भी बहुत कुछ छोड़ना होता है। योगशास्त्र के अनुसार जो व्यक्ति भोजन–त्याग के साथ कषाय, विषय, शृंगार आदि का प्रत्याख्यान करता है, उसके उपवास होता है। केवल आहार–त्याग लंघन है। लंघन और उपवास में बहुत बड़ा अन्तर है। लंघन का सम्बन्ध मात्र भोजन–निवृत्ति से है, जबकि उपवास के साथ सब प्रकार की वासनाएं क्षीण हो जाती हैं। भगवान् महावीर ने धर्म के मुख्य प्रकारों में तपोयोग को समाविष्ट किया। तपस्या शरीर को क्लान्त करने के लिए नहीं, शान्ति के लिए होती है। भगवान् महावीर शान्ति के प्रवक्ता थे। उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ किया, शान्ति की उपलब्धि के लिए किया। उनके प्रवचनों में भी शान्ति को विशेष महत्व मिला है। 'उपसम सार खुसभण्णं' अर्थात् साधुत्व का सार ही शान्ति है। भगवान् को तपस्या में विशेष शान्ति का अनुभव हुआ। आज भी हो सकता है, यदि उस समय आत्मा अन्तर्मुख बन जाये, बाह्य प्रवृत्तियों से मुक्त होकर अन्तर्लीन बन जाये। कई व्यक्तियों को तपस्या में अनिर्वचनीय शान्ति का अनुभव आज भी होता है।

स्वास्थ्य के विधानों में सबसे अधिक बल इस बात पर दिया जाता है कि अधिक भोजन करना, बिना भूख के भोजन करना, निरन्तर भोजन करना, गरिष्ठ भोजन

करना स्वास्थ्य पर प्रहार करना है। प्राचीन समय में यह आयुर्वेदिक नियम था कि हर व्यक्ति प्रतिमास एक या दो उपवास करे। चिकित्सक अपने रोगी को उपवास का सुझाव देते थे। प्राकृतिक चिकित्सा में भी उपवास को बहुत बड़ा मूल्य प्राप्त है। वर्तमान चिकित्सा विज्ञान भी इस तथ्य से सहमत है कि कम भोजन करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और आयुष्य बढ़ता है।

इस सम्बन्ध में तीन–चार दशक पूर्व चूहों पर एक प्रयोग किया गया। कुछ चूहों को निरन्तर भोजन दिया गया और खाद्य पदार्थों में चर्बी–वर्धक पदार्थ विशेष रूप से दिये गये। वे चूहे मोटे–ताजे होने पर भी रोगमुक्त नहीं रह पाये। कुछ चूहों के भोजन में कटौती की गयी और चर्बी आदि नहीं दी गयी। वे दुबले–पतले होने पर भी स्वस्थ रहे और अधिक दिन तक जीवित रहे। चूहों पर किया गया यह प्रयोग मनुष्य–जाति पर भी घटित होता है।

हमारे अपने अनुभव के अनुसार जो व्यक्ति वृद्ध अवस्था में एकान्तर तप (एक दिन के अंतर से भोजन) करने लगते हैं, वे अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ और दीर्घजीवी होते हैं। क्योंकि आंतों को निरन्तर काम करना पड़े या अधिक काम करना पड़े तो पाचन शक्ति क्षीण हो जाती है। पाचन शक्ति ठीक नहीं होगी तो भोजन की परिणति ठीक नहीं होगी। इसलिए हम यह मानकर चलें कि सन्तुलित भोजन, कम भोजन और उपवास स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का बहुत बड़ा रहस्य है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी उपवास का कम महत्त्व नहीं है। समाज में जीने वाला हर व्यक्ति भोजन का अधिकारी है। अन्न कम हो और उपभोक्ता अधिक हों, इस स्थिति में सबकी पूर्ति नहीं होती है। कुछ व्यक्ति ठूंस–ठूंसकर खायें और कुछ व्यक्ति अभाव के कारण भूखे रहें, यह सामाजिक विषमता है। ऐसी विषमता की स्थिति में ही भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने सोमवार के दिन एक समय भोजन करने का परामर्श दिया था। उनका आशय था कि प्रति सप्ताह करोड़ों व्यक्तियों द्वारा एक समय के भोजन की बचत से अभाव–ग्रस्त लोगों को सहयोग मिल सकता है।

अन्न के अभाव में महंगाई बढ़ती है। बढ़ती हुई महंगाई और बेरोजगारी से देश की अर्थनीति लड़खड़ा जाती है। यद्यपि अणुव्रती के लिए उपवास का विधान पारमार्थिक दृष्टि से है, फिर भी एक विशेष हेतु से निर्धारित विधि अपने परिपार्श्व को प्रभावित कर प्रासंगिक रूप से व्यक्ति को अनेक दृष्टियों से लाभान्वित कर देती है।

प्रश्न उठता है कि भूख लगने पर भोजन न लेना शरीर के साथ असहयोग तो नहीं है? दरअसल भूख स्वाभाविक है, पर बहुत बार इसे अस्वाभाविक बना दिया जाता है। क्योंकि सही भूख की पहचान बहुत कम व्यक्तियों को होती है। पशु खाते हैं, वे केवल भूख के लिए

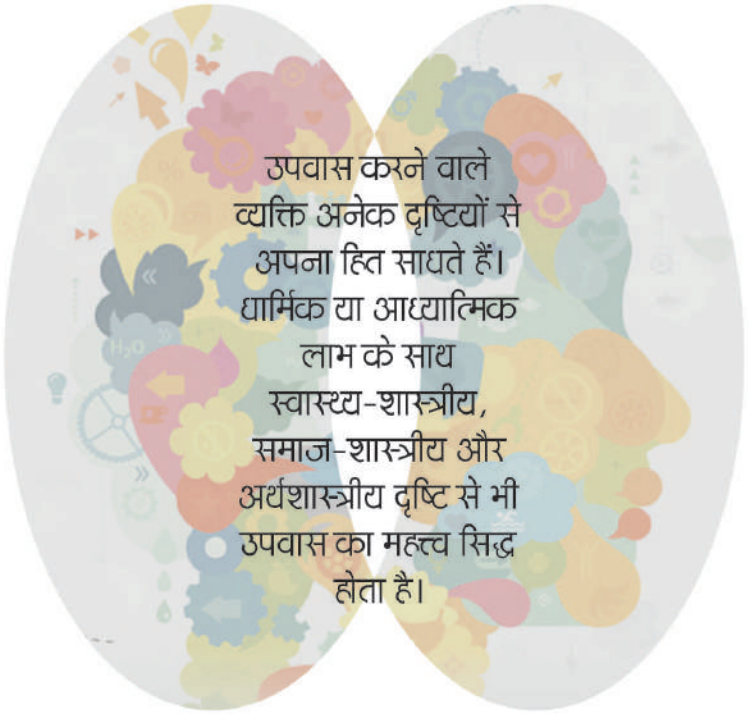

खाते हैं। मनुष्य सही भूख और कृत्रिम भूख को समझ नहीं पाता। क्योंकि वह अपने बुद्धि–कौशल से खाद्य पदार्थों को इतना आकर्षक बना लेता है कि देखते ही मुँह में पानी भर आता है। एक ही पदार्थ एक ही समय में कम और अधिक मात्रा में खाया जा सकता है। खाने का साधन मनोनुकूल हो तो आठ–दस चपातियां खायी जा सकती हैं, अन्यथा दो–चार चपातियां भी गले से नीचे उतारना कठिन हो जाता है। अतः हमें स्वीकार करना होगा कि मनुष्य अपनी भूख को स्वाभाविक नहीं रहने देता।

भूख ऐसी स्थिति है जो बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है। भूख की पूर्ति में विवेक–जागरण बहुत अपेक्षित है। विवेक के आधार पर ही निर्धारण हो सकता है कि भूख स्वाभाविक कब और कितनी है तथा कृत्रिम कब और कितनी होती है। इसके साथ स्वाभाविक भूख को स्वाभाविक बनाये रखने के लिए भी बीच–बीच में उपवास, एकाशन आदि उपयोगी सिद्ध होते हैं। हमारे आगमों में अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को उपवास पोषध आदि करने का निर्देश है। इस क्रम से एक मास में कई उपवास हो जाते हैं।

जो व्यक्ति उपवास आदि में शारीरिक क्लान्ति और मानसिक अशांति का अनुभव करे, वह तपस्या के दूसरे प्रकार जैसे– ऊनोदरी, एकाशन, विकृति, परित्याग आदि से खाद्य–संयम का अभ्यास कर सकता है। अति भोजन और गरिष्ठ भोजन सब दृष्टियों से अहितकर है। स्वाभाविक भूख और स्वाभाविक ढंग से उसकी पूर्ति का ज्ञान विवेक से हो सकता है। विवेक धर्म है, उसका सम्बन्ध छोटे–बड़े हर काम से है। अणुव्रत विवेक–जागरण की दिशा देता है। भोजन पद्धति और शरीर एवं मन पर होने वाली प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखकर ही यहां उपवास आदि तपःसाधना का निर्देश है।

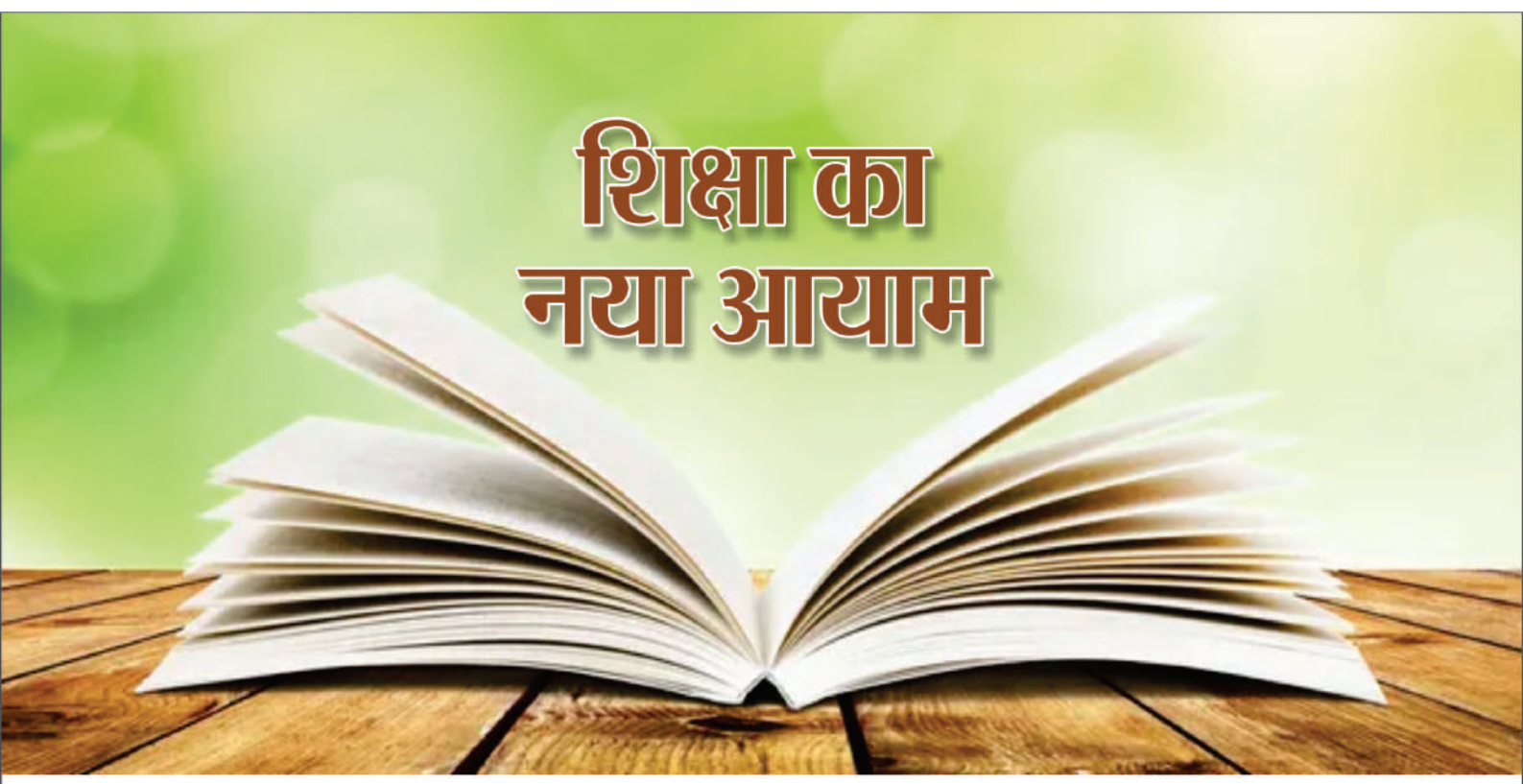

शिक्षा का नया आयाम

आचार्य महाप्रज्ञ

मनुष्य का जीवन बहुआयामी है। भौतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि जीवन के अनेक पक्ष हैं। उसकी व्याख्या किसी एक के पक्ष के आधार पर नहीं की जा सकती। शिक्षा को भी एकपक्षीय नहीं बनाया जा सकता। शिक्षा का काम किसी एक पक्ष को उजागर करना कैसे हो सकता है? शिक्षा वह है, जो जीवन की सारी अपेक्षाओं को पूरा करे।

एक विद्यार्थी हायर सैकंडरी तक अध्ययन करता है, यह एक सामान्यीकरण की प्रक्रिया है। पहले अक्षरबोध–सामान्य ज्ञान करा दिया जाता है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में पढ़ने–लिखने की क्षमता, बौद्धिक विकास, सोचने–विचारने की पृष्ठभूमि निर्मित हो जाती है। विशिष्टीकरण की प्रकिया में वह फिर कॉमर्स लेता है, साइंस अथवा साइकॉलाजी पढ़ता है। विद्या की सैकड़ों शाखाएं हैं। वहां उसका विशिष्टीकरण होता है।

आर्थिक पक्ष के लिए अर्थशास्त्र की पूरी शाखा है। शरीर विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान की पूरी शाखा भौतिक पक्ष के लिए है, शरीर के लिए है, स्वास्थ्य के लिए है। समाज विज्ञान सामाजिक पक्ष के लिए है। जीवन के हर पक्ष के लिए एक शाखा है, जहां विशेष अध्ययन होता है, व्यक्ति विशेषज्ञ बनता है। किन्तु चरित्र पक्ष के लिए कोई स्वतंत्र शाखा नहीं है। व्यवहार मनोविज्ञान में कुछ बातें बतायी जाती हैं, किन्तु चरित्र विकास लिए विशेषज्ञता की बात नहीं आयी और अपेक्षित भी नहीं लगी। आश्चर्य है, विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों की सैकड़ों–सैकड़ों शाखाएं हैं, कहीं दो सौ विभाग हैं, कहीं चार सौ हैं किन्तु एक भी फैकल्टी चरित्र विज्ञान या अहिंसा प्रशिक्षण के लिए नहीं है। इसका अर्थ है–विद्या की ये शाखाएं जीविका के साथ जुड़ी हुई मान ली गयी हैं और चरित्र के विषय को जीविका से बाहर रख दिया गया, इसलिए अपेक्षित नहीं समझा गया।

यह बहुत गंभीर बात है। एक बड़ा प्रश्न है– शिक्षा जगत् में इसे महत्त्व क्यों नहीं दिया गया? शिक्षाशास्त्रियों ने इस ओर ध्यान क्यों नहीं दिया? समाधान के दो विकल्प हो सकते हैं– पहला, आचरण का सामान्यीकरण और दूसरा, आचरण की विशेषज्ञता।

आचरण का सामान्यीकरण पहला विकल्प अच्छा लगता है। विद्या की किसी भी शाखा में जायें, आचरण या चरित्र की शिक्षा सबके लिए अनिवार्य हो, इतना तो होना ही चाहिए। जहां विशिष्टीकरण की बात है, कोई चरित्र विज्ञान में भी विशेषज्ञ बने, विशेषज्ञता प्राप्त करे। सामान्यीकरण की शाखा अनिवार्य है, विशेषज्ञता अनिवार्य नहीं हो सकती। कुछ व्यक्ति, जो रुचि वाले हैं, वे इस शाखा में विशेषज्ञता भी प्राप्त करें। आवश्यक है– विश्वविद्यालय में एक फैकल्टी हो, जो चरित्र की विशेषज्ञता प्राप्त कराये। किन्तु जहां सामान्यीकरण का प्रश्न है, वहां प्राथमिक शिक्षा से विश्वविद्यालयी शिक्षा तक चरित्र विज्ञान का प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए। आचरण की सामान्य शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए। हर कक्षा में और अध्ययन की हर शाखा में वह मिले। प्रश्न होगा – कैसे मिले ? इसके लिए प्राथमिक कक्षाओं में एक स्वतंत्र विषय होना जरूरी है, जिससे विद्यार्थियों को चरित्र विज्ञान, नैतिकता, अध्यात्म की जानकारी मिले। अहिंसा, सत्य आदि अध्यात्म के समग्र पक्षों का ज्ञान देना, उनका प्रयोग कराना–यह प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों

के लिए अनिवार्य होना चाहिए। ग्रेजुएशन या पोस्ट ग्रेजुएशन में थोड़ा–सा परिवर्तन हो जायेगा। बी. ए. अथवा एम. ए. का जो सब्जेक्ट है, उसी में उसका समावेश हो जाये।

अर्थशास्त्र के अध्ययन के साथ–साथ चरित्र के तत्त्व उसमें इस प्रकार समाहित कर लिये जायें जैसे दूध में चीनी मिला दी जाती है। दूध में चीनी का पता नहीं चलता और दूध में मिठास आ जाती है। अहिंसा के सारे तत्त्वों को इस प्रकार उसमें गर्भित कर दिया जाये, जिससे ऐसा न लगे कि कुछ अतिरिक्त दिया जा रहा है और अहिंसा की अवधारणाएं उसमें इस प्रकार समाहित हो जायें कि उसकी मिठास पूरे पाठ्यक्रम में आ जाये। विद्यार्थी अर्थशास्त्री बनें, समाज शास्त्री बनें या पर्यावरणशास्त्री बनें, अध्यात्म के तत्त्व भी इस प्रकार समाहित हों कि पढ़ने वाले की चेतना जागृत हो जाये। आज की अवधारणा है–''अर्थसारं सर्वस्वम्'' यानी अर्थ ही सब कुछ है। ऐसी स्थिति में नैतिक अवधारणाएं काम नहीं कर रही हैं। आज आर्थिक अपराध इतने बढ़ गये हैं कि पहले शायद इनकी कल्पना भी नहीं की गयी होगी। शिक्षा ने दक्षता बढ़ा दी, बौद्धिकता बहुत बढ़ा दी, अब उसका उपयोग आर्थिक अपराध, सामाजिक अपराध के क्षेत्र में हो रहा है।

यह स्वाभाविक बात है–जब समस्या गहराती है, तब समाधान खोजने की चाह बढ़ती है। आज आदमी सोच रहा है– इन समस्याओं का कोई समाधान होना चाहिए और वे लोग विशेष रूप से सोच रहे हैं, जो अपहरण के शिकार हुए हैं, जिनसे दो करोड़, पाँच करोड़, दस करोड़ की माँग हुई है और जिन्हें ले–देकर समझौता भी करना पड़ा है। ऐसे समझौते सरकार को भी करने पड़े हैं। जिनके घरों में दिन–दिहाड़े डकैती हो जाती है, वे इस बारे में बहुत सोचते हैं। जो आतंकवाद के साये में जी रहे हैं, भारी रिश्वत और दहेज की समस्या से प्रताड़ित हो रहे हैं, वे अवश्य सोचते हैं कि स्थिति बदलनी चाहिए।

इस सोच ने जीवन विज्ञान या अहिंसा प्रशिक्षण के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बनाया है। इस अवसर पर भी हमारे शिक्षाशास्त्रियों ने कुछ नहीं सोचा, शिक्षा में कोई परिवर्तन की बात नहीं सोची तो शायद इससे भयंकर भूल और कुछ नहीं होगी। इतिहास इस भयंकर भूल का एहसास करेगा, उल्लेख करेगा और मानेगा–जिनके हाथ में बदलने का सूत्र था, वे कुंभकर्णी नींद में सोते रहे और अपनी रोटी पकाते रहे, उन्होंने देश के लिए कुछ नहीं किया।

मस्तिष्कीय चेतना को बदलने के दो ही तंत्र हो सकते हैं– एक धर्म का तंत्र और दूसरा शिक्षा का तंत्र। यदि शिक्षा–तंत्र और धर्म–तंत्र के लोगों ने ध्यान नहीं दिया तो इतिहास में वे भी इस भयंकर भूल के साक्षी माने जायेंगे।

पूज्य गुरुदेव ने इस दिशा में ध्यान दिया है। कोई स्वार्थ नहीं, कोई प्रयोजन नहीं, कुछ लेना–पाना नहीं। मात्र कल्याण भावना की दृष्टि से परिवर्तन की दिशा में गंभीर चिन्तन किया। एक ही उद्देश्य है कि मनुष्य चरित्रवान् रहे, समाज चरित्रवान् रहे। शिक्षातंत्र के लोगों को भी यह सोचना चाहिए– मस्तिष्कीय परिवर्तन कैसे हो। उसके लिए हमें नया आयाम खोलना होगा। जो शिक्षा का वर्तमान आयाम है, उससे हटकर कुछ करना होगा।

समस्या और तनाव

एक विद्यार्थी तनाव में है तो वह उद्दण्ड भी बनेगा, आक्रामक भी बनेगा और भविष्य में वह आक्रामकता का संस्कार अर्जित करता रहेगा, उसके मस्तिष्क में आक्रामकता की वृत्ति पैठ करती रहेगी। आवश्यक है कि विद्यार्थी को सदा तनावमुक्त रखा जाये। परीक्षा का समय हो या अध्यापक का व्यवहार, घरेलू समस्या हो या आर्थिक समस्या, उसको तनावमुक्त रखा जा सके, यह बहुत आवश्यक है। यही जीवन की कला है–हजार समस्याएं हैं, फिर भी तनावमुक्त रहें। यह न मानें कि समस्या तनाव पैदा करती है। कोई समस्या तनाव पैदा नहीं करती। हमारी मस्तिष्क की दुर्बलता तनाव पैदा करती है या मस्तिष्क का एक भाग, जो हर समय सक्रिय रहता है, तनाव पैदा करता है। अगर हम मस्तिष्क के उस भाग को जागृत कर लें, जो सारे तनावों को रिलीज करता है, कभी भी तनाव को संचित नहीं होने देता, तो बड़ी–से–बड़ी समस्या के आने पर भी तनाव नहीं होगा।

विजय का सूत्र

प्राचीन काल में शास्त्रार्थ बहुत होते थे, वाद–विवाद बहुत चलते थे और उनके बड़े–बड़े अखाड़े चलते थे। आगम साहित्य में बतलाया गया–जब वाद–विवाद चल रहा हो, प्रतिपक्ष उत्तेजनापूर्ण व्यवहार कर रहा हो, ऐसी स्थिति में अगर तुम्हें विजयी होना है तो तुम शान्त रहो। चर्चा करने वाला उत्तेजित होता है और यदि तुम उत्तेजित हो गये तो तुम्हारी पराजय निश्चित है। तुम शान्त रहोगे और वह उत्तेजित रहेगा तो तुम जीत जाओगे, वह हार जायेगा।

जीवन विज्ञान यही सिखाता है–कोई भी समस्या आये, चाहे वह विद्यार्थी जीवन में आये या पारिवारिक जीवन में, समस्या का समाधान तनावमुक्त रहकर करें। जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण व्यक्ति को भीतर में स्थिर करेगा, वह बाहर से चंचल रहकर समस्या का समाधान खोजेगा। आज इसके सर्वथा विपरीत चल रहा है। आज का सूत्र है– 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' अर्थात् कोई तुम्हारे साथ शठता का व्यवहार करे तो तुम्हें भी उसके साथ शठता का व्यवहार करना चाहिए। अगर कोई कंकड़ फेंके तो तुम उस पर पत्थर फेंको। जैसे को तैसा उत्तर दो। ये सूक्तियां और लोक कहावतें बता रही हैं कि हमारी मानसिकता क्या है? इस मानसिकता को बदलना है।

शिक्षा के अनेक पहलू

शिक्षा में अनेक पहलुओं से विचार किया गया। जैसे– बुनियादी तालीम, उद्योग के साथ शिक्षा का सम्बन्ध जुड़ना चाहिए, व्यवसाय के साथ शिक्षा जुड़नी चाहिए आदि–आदि जीविकापरक अनेक पहलुओं से विचार किया गया। किन्तु जैविक दृष्टि से जितना विचार होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ। जैविक–रासायनिक परिवर्तन की दृष्टि से जितना विचार होना चाहिए, उतना नहीं हुआ है। थोड़ा–बहुत मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हुआ है, किन्तु वह भी बहुत नगण्य और प्रायोगिक विधि के रूप में नहीं हुआ है। जीवन विज्ञान में इन सारी प्रायोगिक विधियों पर चिन्तन हुआ है, विचार–विमर्श हुआ है, प्रयोगों का निर्धारण हुआ है और यह प्रयत्न हो रहा है कि कैसे विद्यार्थी के मस्तिष्क का संतुलित विकास किया जाये? मस्तिष्क के वे सारे प्रकोष्ठ जागृत हों, जो जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। अगर जीने की कला, जीवन के रहस्य और जीवन के सूत्र शिक्षा के साथ नहीं जुड़ते हैं तो नमक के बिना भोजन वाली बात होगी। इसीलिए आज इस नये आयाम पर काफी चिन्तन जरूरी है। इसे समझें तथा इस प्रकार नियोजित करें, जिससे विद्यार्थी पर भार भी न पड़े।

सोचें स्वार्थ से परे

गांधीजी ने इस बात पर बल दिया था कि पाठ्यपुस्तकों से मुक्त शिक्षा होनी चाहिए, पर इसे कोई भी आज सुनने–समझने को तैयार नहीं है और सुने भी कैसे ? अगर पाठ्यपुस्तकविहीन शिक्षा हो जाये तो करोड़ों–अरबों का धंधा ही सामप्त हो जायेगा। शिक्षा के क्षेत्र में बड़े धंधे चल रहे हैं। ऐसे धंधेबाज कब चाहेंगे कि ऐसी शिक्षा हो ? न जाने कितने लोगों का स्वार्थ इसके साथ जुड़ा हुआ है। वे कभी पसंद नहीं करेंगे। यह बहुत आगे की बात है किन्तु जो चल रहा है, उसमें कुछ छोड़ दें, कुछ जोड़ दें तो शायद एक नया आयाम, एक नया चिंतन हमारे सामने प्रस्तुत होगा। ऐसा लगता है कि यह बात कुछ समझ में आ रही है। कुछ लोग सोच भी रहे हैं, किन्तु स्वार्थमुक्त होकर केवल शिक्षातंत्रीय दृष्टिकोण से कब सोचा जायेगा, इसकी प्रतीक्षा है। अगर समाज को कुछ बदलना है तो इसके अतिरिक्त और कोई विकल्प भी नहीं है।

क्षमा
उचित व्यवहार

■ सीताराम गुप्ता ■
कवि और विचारक–दिल्ली

परिग्रह का परित्याग कर, सीमित कर उपभोग।
अणुव्रत का उपदेश ये, यही है उत्तम योग।।

मन में अगर विषाद है, तन में होगा रोग।
जिसका मन निर्मल रहे, रहता वही निरोग।।

मन में बसे विकार जो, बाहर कर तू आज।
तन सुधरे मंगल सधे, एक पंथ दो काज।।

जो मन से बीमार है, सो तन से लाचार।
सबसे पहले चाहिए, उस मन का उपचार।।

मन–कंप्यूटर में भरो, अच्छे शुद्ध विचार।
है सकारात्मक सोच ही, एकमात्र उपचार।।

मन में मत रख ईर्ष्या, राग–द्वेष और स्वार्थ।
मार मुझे आ बैल तू, कर दें ये चरितार्थ।।

जीवन मूल्यों में जहां, होता प्रतिदिन ह्रास।
होना वहां संभव नहीं, सर्वांगीण विकास।।

समय–प्रबंधन का यहां, करते सब सम्मान।
भाव–प्रबंधन के बिना, हो न कर्तव्य ज्ञान।।

क्षमा कीजिए हृदय से, क्षमा उचित व्यवहार।
बिना क्षमा होता नहीं, मैत्री का विस्तार।।

पाना चाहे सफलता, जीवन में भरपूर।
मन से हर इक द्वंद्व को, झट से कर तू दूर।।

जब मर्जी जो काम कर, करके सोच–विचार।
घड़ी–मुहूर्त का नहीं कोई, होता ठेकेदार।।

सही समय पर फैसला, करता जो इंसान।
शीघ्र सफलता–रस चखे, होवे ना हैरान।।

अणुव्रत एक राजपथ

■ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ■

भारत ऋषि–मुनियों का देश है। इसमें समय–समय पर ऐसे सन्त पुरुष जन्म लेते रहे हैं, जिन्होंने मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन महापुरुषों में एक नाम आचार्य श्री तुलसी का है। राष्ट्र में नैतिक या चारित्रिक मूल्यों के क्षरण से उपजी समस्याओं को समाहित करने के लिए उन्होंने 'अणुव्रत आंदोलन' का प्रवर्तन किया तथा अणुव्रत के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए लगभग पूरे देश में पदयात्राएं कीं।

जल उठा एक दीया

अणुव्रत एक आन्दोलन है। इस आन्दोलन के सूत्रधार आचार्य श्री तुलसी ने पराधीन भारत की पीड़ा को देखा। उस समय के लोगों में जगी स्वतंत्रता की प्यास का अनुभव किया और महात्मा गांधी के नेतृत्व में बिना किसी रक्तपात के मिलने वाली आजादी के उल्लास का साक्षात्कार किया। स्वतंत्रता सेनानियों का वह उल्लास क्षणजीवी बनकर न रह जाये, इसलिए उन्होंने एक नयी दृष्टि दी– असली आजादी अपनाओ। राजनैतिक दासता से मुक्ति पाना एक बड़ी उपलब्धि है, पर इससे भी बड़ी उपलब्धि होगी मानसिक गुलामी से छुटकारा पाना। विचार की इस एक रश्मि ने उनको भारतीय जनता के जीवन को आलोकित करने की प्रेरणा दी। उनके चिन्तन की धारा आगे बढ़ी और अणुव्रत के रूप में एक दीया जल उठा।

पृष्ठभूमि अणुव्रत की

अणुव्रत की पृष्ठभूमि में आचार्यश्री का एक उदात्त लक्ष्य था। उन्होंने सोचा– हजारों–हजारों लोग हमारे पास आते हैं। अपने मन की असीम आस्था के साथ आते हैं। हम इन्हें क्या देते हैं? इनके जीवन–निर्माण के लिए हमारे पास क्या योजना है? यदि हम इनके लिए कुछ नहीं सोचेंगे तो यहां इनके आने की क्या सार्थकता होगी? इनकी आने वाली पीढ़ियों की उम्मीदों पर हम खरे नहीं उतरेंगे तो उनके भटकाव को कैसे रोका जायेगा? समाज को समयोचित दिशा–दर्शन देना साधुओं का दायित्व है। इस दृष्टि से हमारे पास कोई ठोस कार्यक्रम होना चाहिए।

राष्ट्रीय चरित्र का आधार

आचार्य श्री के चिन्तन को एक नया क्षितिज मिला और वहां अनायास ही निर्णय का चाँद उग आया। उस चाँद की रोशनी में अणुव्रत की पहली आचार–संहिता तैयार की गयी। आचार–संहिता का अपना मूल्य है, पर इससे भी अधिक मूल्यवान अणुव्रत का वह दर्शन है, जिसके आधार पर अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया गया। आचार्यश्री ने देखा– एक ओर देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा भूख–प्यास से बिलख रहा है, दूसरी ओर मुट्ठीभर लोग अतिविलासिता का जीवन जी रहे हैं। जो लोग अभावों में जी रहे हैं, उनकी अपनी दुर्बलता हो सकती है, किन्तु ऐसे लोग कम–से–कम सामाजिक न्याय से वंचित क्यों रहें?

भारत की स्वतन्त्रता के लिए चलाये गये आन्दोलन का महत्तर उद्देश्य था– असमानता, अन्याय और शोषण से विहीन समाज की स्थापना। इस उद्देश्य में तब तक सफलता नहीं मिलेगी, जब तक राष्ट्रीय चरित्र उन्नत नहीं होगा। जातिवाद, सम्प्रदायवाद, संवेदनहीनता, मूल्यहीनता, मादक एवं नशीले पदार्थों का सेवन आदि प्रवृत्तियां चरित्र–विकास की बड़ी बाधाएं हैं। राष्ट्रीय

चरित्र का आधार व्यक्ति–व्यक्ति का चरित्र है। देश के सब वर्गों में चारित्रिक आस्था पैदा करने के लिए जब तक कोई व्यापक अभियान नहीं चलाया जाएगा, वांछित परिणाम नहीं आ सकेगा।

प्रभावी शक्तित्रयी

किसी भी अभियान को चलाने या उसे व्यापकता प्रदान करने वाली मुख्यतः तीन शक्तियां होती हैं– विजन–सम्पन्न नेतृत्व, जुझारू कार्यकर्ता और विचारों का सशक्त संप्रेषण। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी थे। उनकी दूरदर्शितापूर्ण सूझबूझ से ही एक असाम्प्रदायिक आन्दोलन का उदय हो पाया। आचार्यश्री का साहस और धैर्य भी असाधारण था। यदि ऐसा नहीं होता तो अणुव्रत आज जिस मुकाम पर खड़ा है, वहां पहुँच ही नहीं पाता। अन्तरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के विरोधों एवं अवरोधों की परवाह न करके वे अणुव्रत को गति देते रहे। इस कार्य के प्रति उनका गहरा संकल्प, आन्तरिक लगन, लोकमंगल की उदात्त भावना और सतत पुरुषार्थ इस चतुष्टयी का योग नहीं होता तो न देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि शीर्षस्थ नेता इससे प्रभावित होते, न प्रबुद्ध वर्ग के मन में आकर्षण पैदा होता और न आम आदमी इसके साथ जुड़ता।

हमें यह मानकर चलना चाहिए कि अणुव्रत कोई धार्मिक आन्दोलन नहीं है। यह एक ऐसा आन्दोलन है जो सामाजिक स्वास्थ्य देने वाला है। आज बहुत सारे लोग अनुभव कर रहे हैं कि समाज रुग्ण हो गया है। हमारे सामने समाज के दो रूप हैं– स्वस्थ समाज और रुग्ण समाज। आज समाज में बुराई रूपी रोग बहुत बढ़ रहा है। उसे अपेक्षा है चिकित्सा की। वह चिकित्सा संभव है अणुव्रत के माध्यम से। ऐसा कहा जा सकता है कि अणुव्रत सामाजिक स्वास्थ्य देने वाला एक प्रकल्प है। ऐसा प्रकल्प, जिसे स्वीकार करने वाला स्वयं स्वस्थ होगा और स्वस्थता की बयार अपने चारों ओर बहाने में सक्षम होगा।

समस्याओं से त्राण

आज संसार समस्याओं से घिरा हुआ है। समस्याओं के उस समुद्र में अणुव्रत एक ऐसा द्वीप है, जो मनुष्य को त्राण दे सकता है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मनुष्य विषमताओं के जंगल में भटक गया है। अणुव्रत एक ऐसा राजपथ है, जो आदमी को जंगल से बाहर निकाल सकता है। आज अभावों के रेगिस्तान में आदमी तड़प रहा है। अणुव्रत एक ऐसी निर्मल गंगा है, जो तड़पते हुए आदमी की आकांक्षाओं पर संयम की शीतल बूंदें डालकर उसकी तड़प मिटा सकता है और उसकी मूर्च्छा को तोड़ सकता है। हमारे देश में नफरत की इतनी बड़ी–बड़ी चट्टानें पड़ी हुई हैं, जो मनुष्य–मनुष्य के बीच व्यवधान पैदा कर रही हैं। अणुव्रत के हाथ इतने मजबूत हैं कि वह उन चट्टानों को हटाकर आदमी को आदमी से मिला सकता है। एक कवि के शब्दों में –

समय के चाँद–तारो
न सजाओ मेरा जीवन,
मेरी जिंदगी,
यही है मेरा देश,
जगमगा दो इसे।
यह चट्टान नफरतों की
जो रास्ते में पड़ी है,
एकता के हाथों,
मेरे रास्ते से इसे हटा दो।।

आदमी बना दो

अणुव्रत की भी यही आकांक्षा है। जितने भी चिंतनशील, विचारशील लोग हैं, वे सब यही आकांक्षा रखते हैं। आचार्य तुलसी कई बार कहते थे– ''अणुव्रत की कोई बड़ी योजना नहीं है। वह मनुष्य को देवता बनाने की बात नहीं कहता, पर वह इतना चाहता है कि मनुष्य को मनुष्य बना दो।'' अणुव्रत बस इतना ही चाहता है। कोई और कुछ बने या नहीं बने, पर वह आदमी अवश्य बन जाये। इतनी छोटी सी माँग है अणुव्रत की और इस माँग को पूरा करना है सबको मिलकर। हर व्यक्ति यह सोचे कि मैं और कुछ बनूं न बनूं, उससे पहले आदमी बन जाऊं। यदि ऐसा हो तो यह समस्याओं का सागर अपने आप सूख जायेगा।

अणुव्रत का दिशादर्शन

अणुव्रत जीवन का वह राजपथ है, जिस पर कोई भी चल सकता है। न तो यह संन्यास का कंटकाकीर्ण मार्ग है, जिस पर चलने में सिहरन हो, न यह ऐसी पगडंडी है जो सघन जंगल में जाकर खो जाये। यह ऐसा शीतघर है, जिसमें आदमी आराम से जिंदगी बसर कर सकता है। अणुव्रत कहता है कि व्यक्ति कहीं भी, किसी भी स्थिति में रहे, उसे रहने योग्य बना ले। वह जिस मकान में रहे, उसमें कूड़ा–करकट और गन्दगी भरी रहे, यह किसी भी विवेकसम्पन्न व्यक्ति को मान्य है क्या? उसमें प्रकाश, सुगन्ध और संगीत की तरंगें नहीं भरी जा सकें तो कचरा क्यों भरा जाये? नैतिक मूल्यों के शिखर पर न चढ़ा जाये तो ऐसी फिसलनी पर जाकर क्यों बैठें, जहां से गिरावट में कोई गतिरोध न हो?

अणुव्रत एक ऐसा सूचना–पट्ट है, जो व्यक्ति को सजग करता है। उसके अनुसार अपराधी मनोवृत्ति दिशाभ्रम पैदा करती है। आक्रामक मनोभाव से भय को

विस्तार मिलता है। तोड़फोड़मूलक प्रवृत्तियों से असुरक्षा का भाव बढ़ता है। जातिवाद, रंगभेद और छुआछूत की नीति ऐसी दीवारें बनाती है, जो मनुष्य को मनुष्य से दूर करती है। धार्मिक असहिष्णुता उन्माद को बढ़ाती है। अप्रामाणिकता घोटालों और धोखाधड़ी की संस्कृति को पनपने का अवसर देती है। निःसीम भोग और अपरिमित संग्रह लालसा की आग को इन्धन देता है। चुनाव तनाव को बढ़ावा देता है। सामाजिक कुरूढियां विकास की बाधाएं हैं। मादक और नशीले पदार्थ चेतना को मूर्च्छित करते हैं। पर्यावरण का असन्तुलन मानव–अस्तित्व के लिए खतरा है। अपने अस्तित्व को बचाना है, सुख–शान्ति से जीना है और युग की चुनौतियों का मुकाबला करना है तो अणुव्रत को साथ रखना जरूरी है, अन्यथा कदम–कदम पर मुसीबतें आ सकती हैं।

चरित्र का सुरक्षा कवच

आज का युग नेता बनने का युग है। परिवार में नेतृत्व की भूख जागी और संयुक्त परिवार की परम्परा चरमरा उठी। समाज में नेतृत्व के संस्कार प्रबल हुए और पद प्राप्ति के लिए संघर्षों का दौर शुरू हो गया। धर्म के क्षेत्र में नेतृत्व की भावना ने जन्म लिया तो अध्यात्म के विकास की बात गौण हो गयी। राजनीति में तो हर व्यक्ति की आँखों में नेता बनने का सपना अंगड़ाई ले रहा है। नेता बनना, दूसरों पर नेतृत्व करना, वादे करना और उनको पूरा करने के समय मुकर जाना– ये सब ऐसी बातें हैं जो राजनीति की नीतिहीनता के जीवंत साक्ष्य हैं। अणुव्रत भी नेता बनने की बात में विश्वास करता है, पर वह नेतृत्व का संबंध व्यक्ति तक ही सीमित रखता है। वह कहता है कि दूसरों पर अनुशासन करने की वृत्ति घातक है। स्वयं पर अनुशासन करो। स्वयं अनुशासित हो गये तो दूसरे लोग आपके अनुशासन में अपने आप आयेंगे। अणुव्रत की इस आकांक्षा को या अणुव्रत के स्वरूप को विश्लेषित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने कहा :

अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा,
वर्ण जाति या संप्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा,
छोटे–छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो।
संयममय जीवन हो ।

अणुव्रत क्या है?

अपने पर अपना अनुशासन – संक्षेप में यही अणुव्रत है। यदि अणुव्रत को धर्म के रूप में परिभाषित किया जाये तो उसकी भाषा होगी – यह वर्ण, जाति और सम्प्रदाय से मुक्त धर्म है, मानव धर्म है। इसके संकल्प बहुत छोटे–छोटे हैं, पर उनकी क्षमता इतनी है कि वे मनुष्य के मानस को रूपान्तरित कर सकते हैं। अणुव्रत का मूलभूत उद्देश्य है आत्मानुशासन का विकास, आत्म–संयम का विकास और आत्मतोष का अनुभव। अणुव्रत एक सार्वभौम, सार्वजनीन और सार्वकालिक कार्यक्रम है।

शहर हो या गाँव, देश हो या विदेश, सब जगह अणुव्रत की उपयोगिता है। श्रमिक हो या व्यवसायी, शिक्षक हो या विद्यार्थी, जनता हो या जननेता, सबके लिए अणुव्रत का दिशा–दर्शन आवश्यक है। दिन हो या रात, सतयुग हो या कलियुग, किसी भी समय अणुव्रत की अपेक्षा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है पिछले अनेक दशकों से अणुव्रत का अभियान अनवरत चल रहा है।

मानव जीवन में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करना ही अणुव्रत का कार्यक्रम है। मानवीय मूल्यों का जितना ह्रास इस युग में हुआ है, संभवतः अतीत में कभी नहीं हुआ। यह कुछ लोगों का अभिमत है। उनकी दृष्टि में इस युग का आदमी चारों ओर फिसल रहा है। पारिवारिक अनुशासन में शिथिलता आयी है। सामाजिक मूल्य बदल रहे हैं। राष्ट्रीय चरित्र को पक्षाघात हो गया। धार्मिक आस्था कमजोर पड़ गयी। ऐसी स्थिति में मानवीय मूल्यों की चिन्ता कौन करेगा? यह अभिमत गलत है, ऐसी बात नहीं है। इसमें भी आंशिक सच्चाई है, पर इसे पूर्ण सत्य मानने का अर्थ होगा कि अतीत में कभी ऐसा कुछ होता ही नहीं था। आज तो कलियुग है। क्या त्रेता, द्वापर और सतयुग में सब लोग अच्छे होते थे? मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों की अनुगूँज इस युग को प्रेरणा देने वाली है तो क्या रावण का चरित्र यह नहीं बताता है कि उस समय भी आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के साथ खिलवाड़ करने वाले व्यक्ति होते थे।

अणुव्रत : शाश्वत मूल्य

अणुव्रत शाश्वत तत्त्व है। उसकी अपेक्षा आज जितनी है, अतीत में उससे कम नहीं थी। भविष्य में अणुव्रत कभी अप्रासंगिक हो जायेगा, ऐसा नहीं लगता। जब तक मानव समाज पूरा जीवित रहेगा, मानवता को उससे अलग नहीं देखा जा सकता। अणुव्रत का दर्शन मानवता का दर्शन है। चिन्ता का विषय इतना ही है कि मानव मानवता को भूलकर अनुशासनहीन जीवन जी रहा है। अनुशासन जग जाये तो ऊपर के सारे अनुशासन अपने आप कृतार्थ हो जाते हैं। आत्मानुशासन के अभाव में समाज और राष्ट्र का अनुशासन प्रभावी नहीं हो सकता।

चरित्र–निर्माण का आंदोलन

अणुव्रत चरित्र–निर्माण का आंदोलन है। नैतिक

मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा देने वाला आंदोलन है। अपने आपको देखने का आंदोलन है। जो व्यक्ति अपने भीतर झांकता है, अपनी दुर्बलताओं को देखता है और उनसे मुक्त होने के लिए संकल्पित होता है, अणुव्रत उनके लिए एक शक्तिशाली आलम्बन है। अणुव्रत आचार संहिता एक मानक है। इसको आधार मानकर चलने वाला व्यक्ति अनुभव करता है कि उसका कद ऊँचा होता जा रहा है, तथा उसके पाँवों के नीचे भी धरती है। वह धरती है मानवीय मूल्यों के प्रति उसकी आस्था। इस आस्था के बल पर ही चरित्र की सुरक्षा संभव है। इस अर्थ में आस्था को चरित्र का सुरक्षा कवच माना जा सकता है।

मूल्य परिष्कार पर बल

अणुव्रत–दर्शन मूल्य निर्वाह की अपेक्षा मूल्य परिष्कार की बात पर अधिक बल देता है। परिष्कृत मूल्य ही जीवन को सहज और आनंदमय बना सकते हैं। अणुव्रत आचार संहिता की एक धारा है– सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं देना। मेरी समझ के अनुसार इस धारा का संबंध मूल्य–परिष्कार की भावना से ही है। अणुव्रत यह नहीं कहता कि आप किसी परम्परा का निर्वाह न करें। जो परम्पराएं या पद्धतियां सामाजिक अथवा वैयक्तिक चेतना का परिस्फुरण करती हैं, उनको तोड़ना विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करना है, किंतु जिन परंपराओं का वहन करते समय अस्वाभाविक परिस्थितियां खड़ी होती हैं, उनके संबंध में चिंतन नहीं करना उस ओर से आंख मूंद लेने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? इसलिए मूल्य परिष्कार की दिशा में एक तीव्र प्रयत्न की अपेक्षा है, जिसकी पूर्ति अणुव्रत के मंच से हो सकती है। अणुव्रत में आस्था रखने वाले व्यक्ति इस संबंध में सोचें और समाज को कोई नयी दिशा दें, जिससे स्वस्थ समाज–संरचना का सपना साकार हो सके।

नीति और चरित्र

लोकतंत्रीय शासन–पद्धति का आधार है – नीति और चरित्र इस आधार के बिना किसी भी क्षेत्र में लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। लोक जीवन में नैतिक मूल्यों का जितना प्रयोग होगा, जनता के जीवन का स्तर उतना ही उन्नत हो सकेगा। जनता का समुन्नत चरित्र ही राष्ट्रीय चरित्र है। जनता के चरित्र को ऊँचा उठाने का जितना अवकाश लोकतंत्र में है, शायद ही किसी दूसरे तंत्र में हो।

रहे त्रिआयामी जागरुकता

अणुव्रत एक नैतिक आंदोलन है। वह जन–जन के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए नैतिक आचार संहिता के आधार पर काम कर रहा है। अणुव्रत के अनुसार त्रिकोणात्मक अभियान के द्वारा अनैतिक वृत्तियों से जूझा जा सकता है। वे तीन कोण हैं–प्रशासन, समाज और व्यक्ति। प्रशासन कानून के द्वारा किसी प्रवृत्ति को रोकना चाहे, उसमें सामाजिक और वैयक्तिक स्तर पर सहयोग नहीं मिले तो अनैतिकता का एक रास्ता बन्द होगा, चार नये रास्ते खुल जायेंगे।

व्यक्ति नैतिक जीवन जीना चाहे, पर उसे समाज और प्रशासन की ओर से समुचित व्यवस्था न मिले तो वह पराभूत हो जाता है। इसलिए प्रशासन का काम है समुचित व्यवस्थाओं का निर्माण, समाज का काम है नैतिकता की दृष्टि से उपयुक्त मानदंडों का निर्धारण और व्यक्ति का काम है नैतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान रहते हुए अपने जीवन में उनका क्रियान्वयन। प्रशासन, समाज और व्यक्ति अपने–अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें तो कोई कारण नहीं कि राष्ट्र का नैतिक स्तर उन्नत न हो।

नीति का एक सूक्त है – 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' अर्थात् जो कार्य अपने लिए प्रतिकूल हो, वह दूसरों के प्रति भी मत करो। अणुव्रत इसी आत्मलक्षी जीवन पद्धति का निर्देश देता है। एकतंत्रीय शासन प्रणाली में शासक की इच्छा ही सब कुछ होती है, किन्तु जनतंत्र में शासक के हितों की तरह व्यक्ति के हितों को भी सुरक्षित रखने का प्रावधान है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति प्रशासन पर हावी हो जाये। सत्ता और विचार–स्वातंत्र्य दोनों के समुचित उपयोग की दृष्टि से अणुव्रत के निर्देशक तत्त्व उपयोगी हो सकते हैं।

आवश्यक है अर्थ की शुचिता

अर्थ जीविका का साधन है। व्यक्ति साधन जुटाता है, यह समाज–सम्मत है, पर संग्रह और शोषण की स्थिति हर दृष्टि से अवांछनीय है। नीतिकारों ने अर्थ–शुचिता को महत्त्व दिया है। अर्थ–शुचिता से उनका प्रयोजन है–अर्थार्जन के साधन दूषित न हों। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति व्यापारी है, वह व्यापार करता है। मिलावट व्यापार का दूषण है। दोषपूर्ण नीति से होने वाला व्यवसाय व्यक्ति की नीतिमत्ता के आगे प्रश्नचिह्न खड़ा कर देता है।

अणुव्रत इस संदर्भ में प्रशासन और जनता दोनों को नैतिकता का पथ दिखाता है। उभयपक्षीय नैतिकता से ही लोकतंत्र को सर्वांगीण सफलता मिल सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रति प्रामाणिक हो और दूसरे के प्रति प्रामाणिक रहने का संकल्प ले तो लोकतंत्र के उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। तंत्र के साथ अनुशासन की अनिवार्यता है, चाहे वह एकतंत्र हो या जनतंत्र, किन्तु भय और आतंकपूर्ण अनुशासन अस्थायी होता है। इसमें व्यक्ति छिपकर गलत काम करता है और अपने बचाव के लिए अन्य गलत तरीकों का सहारा लेता है।

आतंक की स्थिति में प्रशासन और जनता के बीच विश्वास का विकास नहीं हो सकता। एक–दूसरे के प्रति विश्वास हुए बिना एक–दूसरे के हितों को अच्छी प्रकार नहीं समझ जा सकता। इसीलिए अणुव्रत भय और आतंक से स्वीकृत अनुशासन को अंतःकरण से जोड़ना चाहता है। वह सन्देह और अस्थिरता को विश्वास में परिणत करना चाहता है। इससे लोकतंत्र की नींव गहरी होगी। लोकतंत्र के अनुरूप परिवेश में और अधिक काम करने की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

संक्रमण का युग

आज का युग संक्रमण का युग है। संक्रमण का युग जब कभी आता है, कुछ चीजों का लोप होता है और कुछ चीजों का नया जन्म होता है। कुछ टूटता है और कुछ जुड़ता है। उसकी आकृति भले ही धूमिल रहे, लेकिन ध्वंस के मलबे से वह बाहर निकल जाता है। कुछ मूल्यों का क्षरण होता है तो कुछ नये मूल्यों की खोज भी होती है। यह सब इस युग में हो रहा है। आज वैज्ञानिक अनुसंधाता ब्रह्माण्ड के रहस्यों को खोज रहे हैं, पर सत्य उनके हाथ से बहुत दूर है। मेडिकल साइन्स में शरीर के प्रत्येक अवयव की गहरी छानबीन की जा रही है, किन्तु आत्मा के रहस्यों से पर्दा नहीं उठ रहा है। जिंदगी के बाह्य रूप पर बहुत अधिक विश्लेषण हो रहा है, किन्तु आंतरिक पक्ष अछूता रहा है। यही कारण है कि आज मनुष्य का जीवन कुछ बुनियादी सवालों से घिर गया है और वे सवाल उत्तर माँग रहे हैं। पर उत्तर कौन दे? किसी न किसी को उत्तर तो देना ही होगा। जब हर एक व्यक्ति की जिंदगी ऐसे बुनियादी सवालों से घिरी हुई हो और उत्तर नहीं मिले तो जीना दूभर हो जाता है। आज यही स्थिति हो रही है इस संसार की।

एक आवाज उभरे

लोकतंत्र एक लंबी लड़ाई के बाद हमारे देश में आया, लेकिन उसके परिणाम क्या आये? लोकतंत्र आया, उसके साथ–साथ हर तबके में उच्छृंखलता आयी। देश में समाजवाद आया, किंतु विषमता का अंत नहीं हुआ। धर्मनिरपेक्षता का नारा लगा, पर परिणाम यह आया कि अध्यात्म और नैतिक मूल्य गौण हो गये, राजनीति हावी हो गयी। विकास और आधुनिकता के नाम पर संस्कृति के मूल पर प्रहार हुआ। अपसंस्कृति ने हमारी अपनी संस्कृति को इतना क्षत–विक्षत कर दिया कि उसकी पहचान भी मुश्किल से हो रही है। ऐसे समय में अपेक्षा है कि इन सब विषमताओं के बीच एक आवाज उभरे जो जीवन को सही दिशा दे सके।

व्यक्ति और समाज की सापेक्षता

समाज का घटक होता है व्यक्ति। समाज में होने वाले सुधार–बिगाड़ और विकास–ह्रास का उत्तरदायी व्यक्ति को माना जाता है। समाज के निर्माण में अहम भूमिका व्यक्ति की रहती है। व्यक्ति की स्वस्थता सामाजिक स्वास्थ्य का आधार बनती है। यह सच्चाई का एक पक्ष है। दूसरे पक्ष के अनुसार व्यक्ति भी समूह से प्रभावित होता है। वह जिस परिवार और समाज में रहता है, उसकी परम्पराओं, रीति–रिवाजों और मूल्य–मानकों का प्रभाव ग्रहण करके ही वह अपने व्यक्तित्व को बनाता है। इस दृष्टि से व्यक्ति और समाज की सापेक्षता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अणुव्रत का उद्देश्य है स्वस्थ समाज की संरचना । सामाजिक स्वास्थ्य के घटक तत्त्व हैं– संयम, व्रत, त्याग, चरित्र और नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था । समाज की धरती पर इन तत्त्वों की फसल खड़ी नहीं हो सकती। इनके बीजों को व्यक्ति के जीवन में बोया जा सकता है। व्यक्ति के सुधार में ही समाज और राष्ट्र के सुधार की संभावनाएं देखी जा सकती हैं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने इस बात की ओर इंगित करते हुए कहा–

सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
'तुलसी' अणुव्रत–सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा,
मानवीय आचार संहिता में अर्पित तन–मन हो।
संयममय जीवन हो।।

पारिवारिक सौहार्द का धरातल

भारतीय जीवनशैली की एक विशेष पहचान थी। तीन–चार पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते थे। संयुक्त परिवार के नाम से प्रसिद्ध उस जीवनशैली को विरासत के रूप में आगे वाली पीढ़ियों को सौंप दिया जाता था।

परिवार के सुख–दुःख सामूहिक होते थे। अनुकूल या प्रतिकूल जो भी स्थिति होती, उसे सब मिलकर भोगते थे। परिवार में कमाई करने वाले कितने भी हों, सम्पत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता था। बीमार, अपाहिज और विधवा स्त्री का भी उस सम्पत्ति में पूरा हिस्सा रहता था। कोई व्यक्ति कार्यक्षम हो या नहीं, वह परिवार के लिए भार नहीं माना जाता था। बुजुर्ग व्यक्तियों को परिवार में पूरा अधिमान दिया जाता था। उनके आदेश–निर्देश बिना कोई काम होता ही नहीं था।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध की सबसे बड़ी त्रासदी है परिवारों की टूटन। सकारण और अकारण परिवार विघटित हुए हैं। हर परिवर्तन में कुछ बातें आदेय हो सकती हैं, किन्तु अनपेक्षित और अवांछित तत्त्वों की घुसपैठ पर नियन्त्रण नहीं रहने से अच्छाई गौण हो जाती है। पारिवारिक बिखराव समाज की चिन्ताओं में एक प्रमुख चिन्ता का विषय है। जनजीवन से जो बात छूट जाती है, उसे वापस लाना काफी कठिन होता है। पर वह आवश्यक हो तो उसकी वापसी के लिए प्रयास आवश्यक है। जिस युग में एक पीढ़ी के साथ दूसरी पीढ़ी का रहना भी मुश्किल हो रहा हो, वहां संयुक्त परिवार की वापसी कैसे हो सकती है?

अणुव्रत परिवार योजना पारिवारिक सौहार्द की सीख और प्रशिक्षण के साथ वातावरण को बदल सके तो एक बड़ी उपलब्धि हो सकती है।

परिवार को संस्कारी बनाने का उपक्रम

अणुव्रत की अपनी आचार संहिता है। उसे सामने रखें, पढ़ें और समझें। उसमें एक भी नियम ऐसा नहीं है, जो किसी का जीना दूभर बना दे। हो सकता है, परिवार के सब लोगों की समझ इतनी परिष्कृत न हो। नियमों की भाषा उनके मन में घबराहट पैदा कर दे। खिचड़ी से भरी हुई थाली के बीच में हाथ डालने से उसके जलने की संभावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, किन्तु किनारे–किनारे से एक–एक ग्रास खिचड़ी खाने वाला कभी भूखा नहीं रहता।

अणुव्रत परिवार योजना में सम्मिलित होने वाले परिवारों के लिए यह प्रावधान भी है कि परिवार के सब सदस्य एक साथ अणुव्रती बनने में कठिनाई का अनुभव करें तो एक व्यक्ति अणुव्रत को अच्छी तरह समझकर व्रतों की भूमिका में प्रवेश करे। वही व्यक्ति 'अणुव्रत परिवार' का प्रमुख बन सकेगा, जो अणुव्रती हो। उसका दायित्व होगा कि वह अपने पूरे परिवार को धीरे–धीरे अणुव्रत के सांचे में ढाल दे। उसके लिए सबसे बड़ा आश्वासन यह होगा कि उसकी हर पीढ़ी अपनी भावी पीढ़ी को अणुव्रत के संस्कार देकर इस परम्परा को आगे बढ़ाती रहेगी।

अणुव्रत प्रधान जीवनशैली

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि अणुव्रत ही एकमात्र ऐसा कार्यक्रम है जो जन को जन से जोड़ने वाला है, हर व्यक्ति को अपने भीतर देखने की प्रेरणा देने वाला है और जीवन की दिशा बदलने वाला है। इस आधार पर अणुव्रत की भावी योजनाओं के बारे में यह चिंतन आवश्यक है कि आने वाले वर्षों में अणुव्रत के बारे में क्या करना है? यह भी जरूरी है कि अणुव्रत प्रधान जीवनशैली को व्यापक बनाने के लिए कोई नया उपक्रम चलाया जाये। अणुव्रत प्रधान जीवनशैली को सबसे पहले अपने आसपास से शुरू करें। अपने आसपास के लोगों को अणुव्रत की जीवनशैली का प्रशिक्षण दें तथा अणुव्रत का दर्शन समझायें। लोगों को यह भी बताया जाये कि अणुव्रत से क्या–क्या फायदे हो सकते हैं।

मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह वही काम करता है, जिसमें उसे लाभ की संभावना या अनुभूति होती है। अणुव्रत के लाभ के बारे में लोगों को समझायें, बतायें ही नहीं, लाभ का अनुभव भी करायें। इस प्रकार अणुव्रत प्रधान जीवनशैली की अगर सही ढंग से प्रस्तुति दी जाये और उसके लिए सघन प्रयत्न किया जाये तो विश्वास किया जा सकता है कि आने वाले समय में अणुव्रत अधिक व्यापक रूप से जनता के सामने आयेगा तथा इसकी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता और अधिक बढ़ती जायेगी।

आज का युग बौद्धिक युग है, वैज्ञानिक युग है और विकास का युग है। आदमी बहुत पढ़ता है, बहुत सुनता है, लेकिन जहां मनन करने का, सुने हुए और पढ़े हुए को आचरण में लाने का प्रश्न है, वहां एक शून्य उभरता है। ज्ञान और आचरण के बीच दूरी बढ़ती जा रही है। अणुव्रत एक ऐसा आन्दोलन है जो ज्ञान और आचरण की दूरी को पाटने का काम कर रहा है। सात दशक से अधिक का इसका अपना इतिहास है। इसके इतिहास के अनेक अध्याय लिखे जा चुके हैं और अनेक अध्याय अभी लिखे जाने हैं। अणुव्रत की जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं का यह दायित्व है कि वे अणुव्रत के अनलिखे इतिहास को जनता तक पहुँचायें। अणुव्रत के दर्शन से जन–जन को अवगत करायें।

असाधारण साध्वीप्रमुखा थीं शासन माता कनकप्रभा जी –आचार्य महाश्रमण

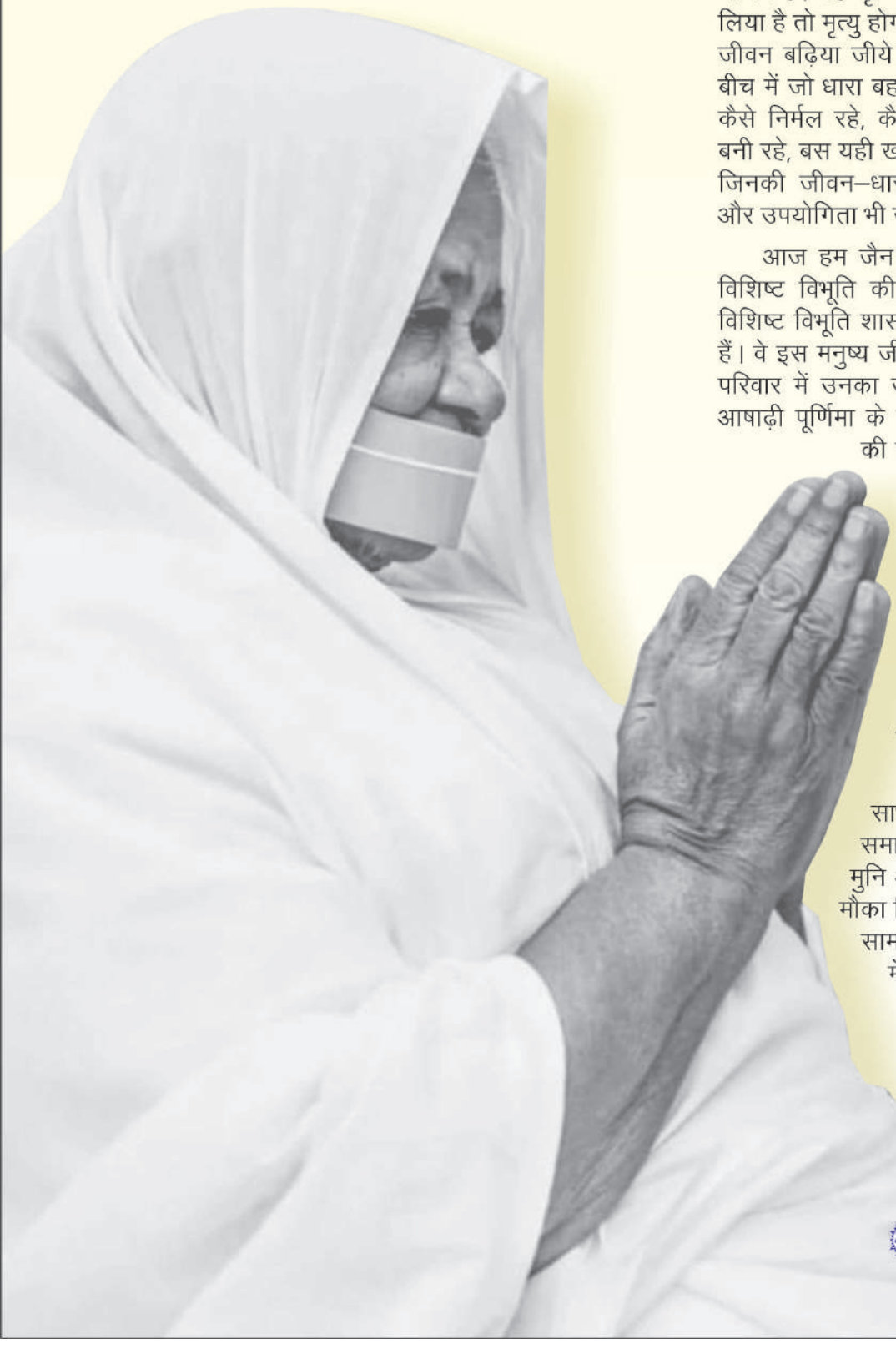

प्राणी जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक समय आता है जब वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। शास्त्रकार ने इस जीवन की नश्वरता को चित्रित करते हुए कहा है कि जैसे कुश के अग्र भाग पर ओस की बूँद लटकती है, वह अल्पकाल तक रहती है, उसी प्रकार मनुष्यों का जीवन है। यह सृष्टि की नियति है, व्यवस्था है कि जन्म लिया है तो मृत्यु होगी ही। विशेष बात यह है कि आदमी जीवन बढ़िया जीये। जन्म और मृत्यु दो तट हैं। इनके बीच में जो धारा बहती है, वह जीवन धारा है। यह धारा कैसे निर्मल रहे, कैसे गतिमती बनी रहे और उपयोगी बनी रहे, बस यही खास बात है। अनेक लोग ऐसे होते हैं, जिनकी जीवन–धारा में निर्मलता रहती है। गतिमत्ता और उपयोगिता भी उनके जीवन की रहती है।

आज हम जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशिष्ट विभूति की स्मृति सभा मना रहे हैं और वह विशिष्ट विभूति शासनमाता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी हैं। वे इस मनुष्य जीवन में आयी थीं और लाडनूं के बैद परिवार में उनका जन्म हुआ। विक्रम संवत 2017 की आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना भूमि केलवा में वे परम पूज्य आचार्य तुलसी द्वारा साध्वी के रूप में दीक्षित हुईं। तेरापंथ की स्थापना के दो सौ वर्षों की सम्पन्नता के दिन द्विशताब्दी का अवसर था। गुरुकुल वास में आचार्य तुलसी के नैकट्य में रहने का उन्हें अवसर मिला। इस अवधि में शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बहुत विकास किया।

आचार्य तुलसी के जीवन से साध्वीप्रमुखा के जीवन की बड़ी समानताएं हैं। जैसे आचार्य तुलसी को मुनि अवस्था में गुरुकुल वास में रहने का मौका मिला तो साध्वी कनकप्रभा जी को भी सामान्य साध्वी अवस्था में गुरुकुल वास में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों का करीब 11–11 वर्षों का वह काल रहा था और करीब 11 वर्षों के बाद वे हमारे धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखा के रूप में नियुक्त हुईं। आचार्य तुलसी ने

गंगाशहर में विक्रम संवत 2028 माघ कृष्ण त्रयोदशी को उन्हें साध्वीप्रमुखा का दायित्व सौंपा। हमारे धर्मसंघ में उनसे पहले सात साध्वीप्रमुखा हो चुकी थीं। ये आठवीं साध्वीप्रमुखा बनीं और साध्वीप्रमुखा के रूप में पचास वर्षों से भी अधिक समय तक रहीं। हमने अभी कुछ समय पहले लाडनूं जैन विश्व भारती में 30 जनवरी 2022 को उनका अमृत महोत्सव मनाया था।

आचार्यों में अब तक एक आचार्य तुलसी हुए पचास वर्ष पार करने वाले आचार्यकाल के और साध्वी प्रमुखाओं में अब तक कनकप्रभा जी हुईं साध्वीप्रमुखा काल के पचास वर्ष पार करने वाली। वे क्रमशः तीन आचार्यों के सान्निध्य में साध्वी प्रमुखा रहीं। आचार्य तुलसी के सान्निध्य में 25 वर्षों से अधिक तक रहीं। फिर आचार्य महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में रहीं। परम पूज्य आचार्य तुलसी की बड़ी कृपादृष्टि उन पर रहती थी। गुरुदेव तुलसी ने उनको महाश्रमणी अलंकरण तो पहले ही दे दिया था विक्रम संवत 2035 में राजलदेसर में। बाद में उनको महाश्रमणी का पद भी दिया गया विक्रम संवत 2046 में योगक्षेम वर्ष में भादो शुक्ला नवमी को और आचार्य तुलसी ने फिर उनको संघ महानिदेशिका का भी स्थान दिया, अलंकरण दिया, दायित्व प्रदान किया। मैंने भी उनको गुवाहाटी में असाधारण साध्वीप्रमुखा के रूप में स्थापित किया और जब उनके साध्वीप्रमुखा काल के पचास वर्षों की सम्पन्नता का अवसर आया तो उनको शासन माता का मान दिया। सैकड़ों हजार से ज्यादा साध्वियां हमारे संघ में हो गयी हैं, मगर एकमात्र साध्वी थीं कनकप्रभा जी जिनको शासनमाता का अत्यंत गौरवपूर्ण सम्मान मिला।

उनमें साहित्यिक प्रतिभा थी। कितने ही ग्रंथों का उन्होंने सम्पादन किया, लेखन किया। वे कवयित्री थीं। कविताएं रचती थीं। उनके लेखन में, उनके भाषण में वैदुष्य था। हिन्दी भाषा का अच्छा अध्ययन था। संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था और अंग्रेजी का भी कुछ अध्ययन उनका किया हुआ था। राजस्थानी भाषा हमारी आम भाषा है ही तो यों वे विदुषी साध्वी थीं और साहित्य के क्षेत्र में उनकी अच्छी गति थी। उनको बोलने का अच्छा अभ्यास था। साध्वियों की सार–संभाल के कार्य में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। संतों से भी उनका सम्पर्क था।

मैं बच्चा था, आचार्य श्री तुलसी 1974 में दिल्ली में विराजमान थे। मैं वैरागी रूप में बच्चा था तो गुरुदेव के पास दो बार दिल्ली आया। तब अणुव्रत विहार, जिसे आजकल अणुव्रत भवन बोलते हैं, में गुरुदेव विराजमान थे। पहली बार तो संभवतः मुझे साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश गुरुदेव ने दिया।

दूसरी बार दिल्ली आया तो गुरुदेव ने मुझे साधु दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की। साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी वहां आ गयी थीं या आयी हुई थीं। तो संभवतः गुरुदेव ने मेरा परिचय कराते हुए कहा, यह लड़का सरदारशहर का है। अर्ज करने आया है। यह लड़का कैसा लगता है? तो साध्वीप्रमुखा ने जहां तक मुझे याद है, फरमाया – "लड़को लागै तो हुश्यार है।" बाद में दीक्षा हो गयी, फिर गुरुदेव तुलसी के पास हम बच्चे रहते तो साध्वीप्रमुखा जी हमें सुबह नाश्ता कराया करती थीं। उनसे प्रेरणा भी मिलती थी। हमें साधुचर्या के उपकरण भी वे देती थीं।

साध्वीप्रमुखा जी में संपादन की अद्भुत कला थी। भगवती जोड़ नामक बहुत विशालकाय ग्रंथ है। उसके सम्पादन में उनका भी बड़ा योगदान रहा है। बहुत लम्बी यात्राएं भी उन्होंने की। हमारे साथ नेपाल भी पधारी थीं। उन्होंने अनेक रूपों में सेवाएं दीं और आचार्यों ने भी उन्हें बड़ा सम्मान दिया। इतना सम्मान पिछली सात साध्वी प्रमुखा को नहीं मिला। उन्होंने पूरे साध्वी जीवन में एक चातुर्मास अलग किया। बाकी सारे चातुर्मास उन्होंने गुरुकुल वास में ही किये। कभी–कभी छोटी यात्राएं भी उन्होंने अलग की। उन्होंने पाँच सौ से अधिक साध्वियों का केशलोच कर दिया अपने साध्वीप्रमुखा काल में।

पिछले कुछ अरसे से उनके स्वास्थ्य की कुछ बड़ी कठिनाई हो गयी। तो मैंने चिन्तन किया, साध्वीप्रमुखा जी का व्हील चेयर से दिल्ली जाना कठिन है। तो हम भी दिल्ली न जायें, इनके पास ही रहें। इनकी चिकित्सा करवायें। दिल्ली के लोग आ गये बीदासर में। दिल्ली वाले हमारे श्रावकों ने कहा कि इनका इलाज दिल्ली में अच्छा हो सकता है। आप इनको इलाज की दृष्टि से दिल्ली भेज दें। आप भी दिल्ली आ जायें। दोनों काम हो जायेंगे। मैंने संतों आदि से बात की तो निष्कर्ष निकला कि यह बात ठीक ही है। तकलीफ है, निदान हो जाये। इलाज भी हो जाये। तो हमने दिल्ली जाने का निर्णय लिया। उनका दिल्ली आना हो गया। बालाजी हॉस्पिटल में कई दिनों तक रहीं। बाद में मैं भी पहुँच गया तो हमने सोचा हॉस्पिटल में ज्यादा न रखकर अपने किसी स्थान में रखें ताकि धर्म–ध्यान–धार्मिक माहौल ज्यादा रहे। उनको यहां पहुँचाया गया। हम भी यहां पहुँच गये। चिकित्सा का क्रम चलता था जो चला, पर लम्बा समय निकलना संभव नहीं लग रहा था। आखिर वे 17 मार्च को सवेरे लगभग 8.45 बजे उसी अनुकम्पा भवन में अपने उस कमरे में काल धर्म को प्राप्त हो गयीं। तो एक विशिष्ट विभूति जो हमारे धर्मसंघ में एक साध्वी के रूप में साधु संस्था में प्रविष्ट हुई थीं और लगभग 62 वर्षों तक साध्वी के रूप में तपस्या साधना करके वे विदा हो गयीं। उनकी प्रेरणाओं का उपयोग करते हुए हम सभी आगे बढ़ने का प्रयास करें।

20 मार्च, 2022 को अध्यात्म साधना केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित स्मृति सभा में अभिव्यक्त उद्‌गार

आखिरी मौका

क्या आप लाइफ इंश्योरंस के इतिहास में नंबर 1 योजना के बारे में जानते है ?

अंतिम मौका

योजना की विशेषताएँ :

- 100 साल की उम्र तक बढ़ता हुआ रिस्कवर
- 100 वर्ष की उम्र तक वार्षिक टैक्स फ्री रिटर्न
- कम से कम 3 वर्ष भरने के ऑप्शन से शुरु कर सकते है
- महँगाई को मात देता है
- IT SEC 37/(i). कंपनी खर्चे के रुप में लिया जा सकता है
- वसीयत – विरासत परिवार के लिए

कौन ले सकता है ?

0 से 55 वर्ष आयु के लिए

कंपनियों के कमचारियों के लिए

जिंदगी भर टैक्स फ्री योजना

विकल्प–1	या	विकल्प – 2	या	विकल्प – 3
₹ 12 लाख भरे 15 वर्ष के लिए		₹ 36 लाख भरे 5 वर्ष के लिए		₹ 60 लाख भरे 3 वर्ष के लिए

प्राप्त करें 15 वर्ष से रु. 12,00,000/– जिंदगी भर के लिए हर वर्ष टैक्स फ्री और रु. 8 करोड़ परिवार के लिए टैक्स फ्री ! लाईफ टाईम बढ़ती हुई रिस्कवर !!!

पहले आओ पहले पाओ
ऑफर सीमित अवधि के लिए

Contact: 9869230444 / 9869050031 / 022-22448800

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

Legacy of 38 Years | 25000 Happy Customers |11000 Claims Solved
Life Insurance | Jewellers Block | Health Insurance |Motor Insurance

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

26 A, Dagina Bazar, Mumbadevi Rd, Mumbai 400 002 | Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com

कैसे भूलूं क्यों भूलूं उस विलक्षण आत्मा को

■ पदमचंद पटावरी ■

जैन संप्रदायों के चार महत्वपूर्ण घटक होते हैं – साधु–साध्वी, श्रावक और श्राविकाएं। जिस प्रकार किसी कार के चारों पहियों की फिटनेस अनिवार्य होती है, उसी प्रकार सभी जैन संगठन अपने चतुर्भुज घटकों की सक्रियता से पोषित एवं संचालित होते हैं।

जहां तक तेरापंथ धर्मसंघ की बात करें, इसके चतुर्विध घटकों में साध्वी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका देखी जा रही है। संख्या बहुल विनम्र, समर्पित, अनुशासित साध्वी समाज ने धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया है। यद्यपि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य सर्वशक्ति संपन्न संघ नायक होते हैं, पर उनके सफल मार्गदर्शन में साध्वी समाज को विशेष बल देने के लिए साध्वियों में से एक साध्वीप्रमुखा के चयन की परंपरा एक शताब्दी से भी पहले से चली आ रही है। अब तक सात साध्वीप्रमुखाएं अपने दायित्वों की क्रमशः पालना करती हुईं देवलोक गमन कर चुकी थीं।

परम आराध्य आचार्य श्री तुलसी के युग में इस दिशा में आचार्य प्रवर द्वारा एक क्रांतिकारी कदम उठाया गया और आठवीं साध्वीप्रमुखा के रूप में मात्र 30 वर्षीया युवा साध्वी कनकप्रभा जी के नाम की अप्रत्याशित रूप से उद्घोषणा कर पूरे संघ को आश्चर्य में डाल दिया। पर वे थे प्रयोगधर्मी आचार्य श्री तुलसी, जो भविष्य के दर्पण में वर्तमान को परखने में माहिर थे।

सहज संकोचशील, अपने धुन की धनी, अपनी शिक्षा–दीक्षा, स्वाध्याय, लेखन में मग्न साध्वी कनकप्रभा के लिए यह उद्घोषणा ग्राह्य नहीं थी। उन्होंने गुरुदेव श्री तुलसी के समक्ष पद स्वीकार न करने की प्रार्थना की। वह चाहती थीं कि अपनी क्षमताओं के द्वारा विविधमुखी क्षेत्रों में स्वतंत्र विहरण कर सकें, पर गुरुदेव की महत्ता अनकही सी कही जाती है। अंततः सर्वात्मना समर्पित युवा साध्वी ने आचार्य श्री तुलसी की दृष्टि की अनुपालना करते हुए इस दायित्व को स्वीकार कर लिया। दिन, महीने, वर्ष बीतते गये। जैसे–जैसे समय निकला, साध्वीप्रमुखा ने अपने दायित्व और कर्तव्य को सशक्त कर दिया। तेरापंथ धर्म संघ की दो–दो पीढ़ियां, यथा आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ काल कवलित हो गये और तीसरी पीढ़ी के आचार्य श्री महाश्रमण जी का आचार्यकाल परवान पर है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने तीन–तीन आचार्यों की अनुशासना में स्वयं की क्षमता को प्रमाणित करते हुए साध्वी समाज के साथ–साथ पूरे धर्म संघ की सार–संभाल जिस ढंग से की, यह अपने आप में एक कीर्तिमान कहा जा सकता है। वह समस्त साध्वी समाज के दिलों की मुखिया थीं। अपने सर्वतोमुखी प्रयत्नों से आपने साध्वी समाज को जो ऊँचाइयां प्रदान कीं, उसकी प्रशंसा संघ ने ही नहीं, पूरे जैन समाज ने मुक्त कंठ से की। उनका हर क्षण साध्वी समाज के कल्याण के लिए ही लगता रहा।

वे सुप्रतिष्ठित लेखक, कलम की कारीगर, श्रेष्ठ संपादक एवं सफल कवयित्री थीं। उनके द्वारा लिखित एवं संपादित सैकड़ों पुस्तकें जिन्हें कालजयी कृतियां कहना युक्तिसंगत होगा, इसकी गवाह हैं। आपकी कविताओं की प्रशंसा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तक ने की। साध्वीप्रमुखा हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत के अलावा विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं की ज्ञाता थीं। इन भाषाओं के साथ–साथ राजस्थानी भाषा पर भी उनका पूरा अधिकार था। उन्होंने आचार्यों के साथ–साथ लगभग 80 हजार किलोमीटर की पदयात्राएं कीं। इन पदयात्राओं में भी न सिर्फ जैन समाज वरन् देश के नामधारी साहित्यकारों, कवियों, जन नेताओं एवं जन सामान्य तक से आपका मिलना होता। सभी आपसे मिलकर कृतार्थता का अनुभव करते। वे हर आगंतुक से दिल खोलकर बात करतीं, अपनी करुणा उड़ेल देतीं। पिछले दशक में तो उनका

मातृ स्वरूप प्रकट जैसा हो गया था। उन्होंने किसी समस्या व अपेक्षा से उनके दर पर आये किसी भी भक्त को निराश नहीं किया। उन्हें ऐसा पाथेय प्रदान करतीं जिससे आने वाला हर व्यक्ति संतुष्टि का अनुभव करता।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने अपनी कठोर साधना, समर्पण, संघनिष्ठा, गुरुभक्ति, विद्वता, आचार प्रणवता, प्रशासनिक क्षमता से धर्म संघ में प्रभावी पदचिह्न अंकित किये। परम पावन आचार्य द्वारा उन्हें साध्वी प्रमुखा के साथ–साथ महाश्रमणी, संघ महानिदेशिका, असाधारण साध्वी प्रमुखा और शासन माता के गरिमामय सम्बोधनों से लाद दिया गया, पर इसका उन्हें कतई अहं नहीं था। वस्तुतः वे तो पके हुए फलों के पेड़ की तरह निरंतर विनम्र होकर झुकती चली गयीं।

उनका जीवन एक महाग्रंथ की तरह था जिसके हर पन्ने की हर पंक्ति मानव मात्र के लिए प्रेरणा है, प्रोत्साहन है, संदेश है और जीवन निर्माण का प्रशिक्षण है। पिछले वर्ष जब उन्होंने 80वें वर्ष में प्रवेश किया, मैंने आप श्री के जीवन की 80 विशेषताओं का मुक्ताहार उपहृत किया। देखा जाये तो उनकी विशेषताओं का कोई पार नहीं था। वस्तुतः उनकी भाग्य रेखाएं इतनी प्रबल और स्पष्ट थीं जिनकी तुलना में ठहरना हर किसी के बस की बात नहीं थी।

30 जनवरी 2022 को बतौर साध्वी प्रमुखा आपने 50 वर्ष पूरे कर लिये। इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण की पावन सन्निधि में जैन विश्व भारती लाडनूं में अमृत महोत्सव का आयोजन भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूरे धर्म संघ की ओर से आपको वर्धापित किया गया। महामना पूज्य गुरुदेव ने आपको शासनमाता के संबोधन से विभूषित किया।

वस्तुतः हम सब मन ही मन सपने ले रहे थे कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी का जीवन कीर्तिमानों की कहानी है। बस अब आप उम्र के 100 के आंकड़े को पार करें और एक दुर्भेद्य–सा कीर्तिमान स्थापित करें, पर काल की गति विचित्र है। 17 मार्च, 2022 की ब्रह्म वेला में अध्यात्म साधना केंद्र नयी दिल्ली में असाध्य बीमारी से आपका महाप्रयाण हो गया।

उनकी स्मृतियां मन को कचोटती भी हैं और प्रेरणा भी देती रहती हैं। वस्तुतः अचार्य तुलसी युग में जिनका अवतरण हुआ और अचार्य महाश्रमण युग में जिन्होंने अलविदा कह दिया, ऐसी अद्वितीय साध्वी प्रमुखा सदैव यादों में बनी रहें, उनकी आत्मा का उर्ध्वारोहण होता रहे, सादर नमन।

राजसमंद निवासी लेखक तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य तथा प्रखर वक्ता हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद सहित विभिन्न संस्थाओं में शीर्ष पदों पर रहते हुए आपने युवा वर्ग को विशेषतः प्रेरित किया है।

प्रेरणा और पुरुषार्थ की प्रज्वलित दीपशिखा

■ डॉ० दिलीप धींग ■

जैन धर्म के इतिहास में साध्वियों के योगदान को समुचित स्थान–मान मिला हो अथवा नहीं, लेकिन जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के इतिहास में साध्वियों के योगदान का समुचित मूल्यांकन हुआ है। इसका श्रेय युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी को जाता है। यह उनकी दूरदर्शिता ही थी कि 30 वर्ष की युवा साध्वी को उन्होंने साध्वीप्रमुखा का दायित्व प्रदान कर दिया था। उनका विश्वासभरा निर्णय सवाया सफल हुआ। तेरापंथ के तीन युगप्रधान आचार्यों के आचार्यकाल में साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी ने कर्तव्य के हर मोर्चे पर अपनी निष्ठा, प्रतिभा, रचनात्मकता और प्रबंध–कुशलता का उल्लेखनीय परिचय दिया।

ऐतिहासिक साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी एक अप्रमत्त साधिका, भावप्रवण कवयित्री, प्रबुद्ध विचारक, प्रतिभाशाली लेखिका, दक्ष संपादिका, प्रभावी प्रवक्ता और जैन दर्शन व अणुव्रत दर्शन की प्रखर विदुषी थीं। शासनमाता के रूप में विभूषित साध्वीप्रमुखा का चतुर्विध संघ में सुदीर्घ योगदान जुड़ा रहा। जैन धर्म में चतुर्विध संघ से आशय है– श्रमण (साधु), श्रमणी (साध्वी), श्रावक (सद्गृहस्थ) और श्राविका (सद्गृहिणी)। जैन ग्रंथों में इन चारों को तीर्थ की संज्ञा दी गयी है। यह भगवान महावीर की क्रांतधर्मिता है कि उन्होंने साधना के पथ पर अग्रसर मनुष्य को ही तीर्थ का दर्जा प्रदान कर दिया। जैन धर्म में मनुष्य और मनुष्यत्व के सम्मान की यह स्वर्णिम परम्परा है। इसी परम्परा में कनकप्रभाजी 'श्रमणी–तीर्थ' थीं। इसके साथ ही वे श्रमणी–तीर्थ के विशाल समूह की प्रमुखा भी थीं। उन्होंने अपने वात्सल्य से पूरित व्यक्तित्व और विपुल कृतित्व से 'श्रमणी तीर्थ' का बहुत गौरव बढ़ाया। उन्होंने अनगिनत साध्वियों, समणियों, श्राविकाओं और महिलाओं के भीतर छुपी संभावनाओं और क्षमताओं को जगाया। इस तरह एक समृद्ध विरासत सौंपकर वे प्रेरणा और पुरुषार्थ की सतत प्रज्वलित दीपशिखा बन गयीं। तेरापंथ धर्मसंघ के अतिरिक्त उनका बहुआयामी योगदान जैन धर्म, भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य के लिए भी था। उनके महाप्रयाण से केवल तेरापंथ धर्मसंघ में ही नहीं, अपितु भारत की श्रमण परंपरा और हिंदी साहित्य जगत में भी रिक्तता हुई है।

लेखक अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केंद्र चेन्नई के निदेशक हैं।

प्रेम और ममता की प्रतिमूर्ति

■ डॉ० महेन्द्र कर्णावट ■

तेरापंथ धर्मसंघ की यशस्वी महासती साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की दीक्षा तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अलभ्य अवसर पर 8 जुलाई 1960 को महाप्रतापी आचार्य तुलसी के हाथों तेरापंथ की आद्य स्थली केलवा में हुई। तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के प्रथम चरण की सफल समायोजना उपरांत संध्यावेला में चतुर्विध धर्मसंघ ने तेरापंथ की बोधि स्थली राजनगर की ओर प्रस्थान किया और ठीक समय पर राजनगर पहुँच आचार्य तुलसी ने चातुर्मासिक प्रवेश किया। 8 जुलाई 1960 यानी आषाढ़ी पूर्णिमा वि.सं. 2017 का पवित्र दिन, अतः उस दिन सभी साधु–साध्वियों का उपवास रहा।

9 जुलाई 1960 को बोधि स्थली राजनगर में आचार्य तुलसी के हाथों नव दीक्षित 13 साधु–साध्वियों ने ओज आहार ग्रहण किया। इन 13 साधु–साध्वियों में साध्वी कनकप्रभा भी थीं जो आगे चलकर साध्वीप्रमुखा के पद पर मनोनीत हुईं और विगत पचास वर्षों से धर्मसंघ में साध्वी प्रमुखा के महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन कर रही थीं।

मार्च 1960 के संक्षिप्त लाडनूं प्रवास में मुमुक्षु कलावती के परिजनों का आग्रह रहा कि लाडनूं में ही कलावती की दीक्षा हो जाये। आचार्य तुलसी ने परिजनों से कहा– ''अभी जल्दी क्यों करते हो? सामने तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह का ऐतिहासिक अवसर आ रहा है।'' आचार्य तुलसी मुमुक्षु कलावती के संदर्भ में लिखते हैं– ''कला बचपन से ही विरक्त थी। संकोचशील इतनी कि किसी के सामने खुलकर बोलती नहीं। दीक्षित होने की प्रबल भावना, पर बात मुँह से निकलती नहीं।''

ममत्व भरा हाथ

साध्वीप्रमुखाजी की दीक्षा के समय मेरी उम्र मात्र दस वर्ष की थी। मैंने उस ऐतिहासिक दीक्षा समारोह को अपनी नन्हीं आँखों से निहारा था, इतना भर याद है। साध्वी प्रमुखाश्री से मेरा निकट परिचय सन् 1982 में हुआ। प्रसंग था आचार्य तुलसी की 9 नवम्बर 1982 से 10 मार्च 1983 तक की संक्षिप्त मेवाड़ यात्रा। इस यात्रा क्रम में सन् 1982 की अस्ताचल वेला में आचार्यप्रवर 26 दिसम्बर को राजनगर पधारे। तत्कालीन महाराणा हाई स्कूल जहां 1960 में आचार्य तुलसी का तेरापंथ द्विशताब्दी चातुर्मास हुआ, उसी ऐतिहासिक प्रांगण में आयोजित स्वागत–अर्चना समारोह का संयोजन मैंने जिस प्रभावी ढंग से किया, उससे साध्वीप्रमुखाजी विशेष प्रभावित हुईं। यही वह क्षण था जब मैं साध्वीप्रमुखाजी के निकट पहुँचा और पाया ममत्व भरा आशीर्वाद।

आमेट चातुर्मास 1985 में मैं उनके और निकट आया। आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव के संदर्भ में वे मुझसे चर्चा करतीं और निर्देश देतीं कि मेवाड़ व्यापी अमृत कलश पदयात्रा और पंचसूत्रीय अणुव्रत संकल्प पत्र अभियान को हमें कैसे गति देनी है। उस दौरान मैंने पाया आपका ममतामयी वात्सल्य जो सदैव मेरे और मेरे परिवार पर बरसता रहा।

मेवाड़ की धर्मपुत्री

12 अगस्त 1990 को पाली में आचार्य प्रवर से 'मेवाड़ पधारो' का प्रभावी निवेदन किया गया। मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास को शब्द देते हुए मैंने अपने वक्तव्य के मध्य में ही निर्धारित क्रम से पूर्व बालहठ की भाषा में निवेदन किया– "साध्वीप्रमुखाश्री आप तो मेवाड़ की धर्मपुत्री हैं। केलवा–राजनगर में आपका दूसरा जन्म हुआ है। इस नाते मेरा आपसे अनुरोध है कि आप उठें और अपने धर्मपिता से अपनी जन्मभूमि की तरफ से निवेदन करें मेवाड़ की यात्रा करने का।" मेरा निवेदन बालपन–सी आत्मीयता लिये था जिसे सुन सैकड़ों आँखें सजल हो उठीं। पाली के अहिंसा समवसरण में हजारों आँखों ने देखा कि मेरे निवेदन के उपरांत साध्वीप्रमुखाश्री अपने स्थान पर उठ खड़ी हुईं और अपने धर्मगुरु से मेवाड़वासियों की भावना को दृष्टिगत रखने का करबद्ध अनुरोध किया। उस समय मैं स्वयं आश्चर्यचकित रह गया कि साध्वीप्रमुखाश्री ने मेरे निवेदन को स्वीकारा और क्रम से पूर्व ही अपनी बात निवेदित की। इसके बाद मैंने साध्वीप्रमुखाश्री को 'मेवाड़ की धर्मपुत्री' के संबोधन से ही हर सभा में संबोधित किया।

प्रेरणादायी आँचल

व्यक्ति में गुण दो प्रकार के होते हैं– सामान्य गुण

और विशिष्ट गुण। मैंने साध्वी प्रमुखाश्री को सदैव विशिष्ट गुणों से ओतप्रोत पाया है। वे विनम्र, संकोची, ममतामयी, वात्सल्यमयी, सर्वात्मना समर्पित, प्रभावी वक्ता, साहित्यकार, इतिहास मर्मज्ञ, स्वाध्यायी, बहुश्रुत, प्रेरणा स्रोत, निर्मल, विवेकशील, धीर–गंभीर, श्रोता, व्यवहार कुशल, वाणी विवेक सम्पन्न थीं। उनका अति विलक्षण गुण था कि वे सदैव एक विद्यार्थी बनी रहीं जो नया पढ़ने–जानने–सुनने को सदैव उत्सुक रहती थीं।

मैं जब–जब भी आपके सान्निध्य में बैठा, एक ही वाक्य सुनने को मिला– "नया क्या कर रहे हो डॉक्टर सा.? नया क्या लिखा?" मैं समय–समय पर अपनी पुस्तकों की पांडुलिपि लेकर गया तो उनके बारे में पूरी जानकारी ली। पास रखकर अच्छी तरह से पढ़ा–देखा। फिर सुझावों से अवगत कराया। अणुव्रत साहित्य का संकलन, लेखन और संपादन करने की प्रेरणा मुझे साध्वी प्रमुखाश्री एवं मेरे पिताश्री देवेन्द्र काका से ही प्राप्त हुई। इसी प्रेरणा का परिणाम है कि मैं माँ भारती के चरणों में अपना अर्घ्य चढ़ा पाया। मेरे लेखन को परिपक्व करने में साध्वी प्रमुखाश्री का माँ के आँचल की तरह योगदान रहा जिसकी ओट में मैं सदैव स्वयं को सुरक्षित महसूस करता। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि साध्वीप्रमुखाश्री ने मेरी अणुव्रत यात्राओं से संबंधित पुस्तक 'स्मृतियों के वातायन' का पुरोवाक् स्वयं लिखकर शिष्य को कल्पनातीत गरिमा प्रदान की। आपश्री का यह वात्सल्य मेरे जीवन की अमूल्य निधि है।

तेरापंथ की मीरा

भक्तिमयी मीरा के बारे में माना जाता है कि वे विश्व की प्रथम महिला कवयित्री थीं। साध्वी प्रमुखाश्री तेरापंथ धर्मसंघ की मीरा हैं, जिनकी लेखनी से गद्य और पद्य दोनों साहित्य निःसृत हुए हैं। यह भी संयोग ही है कि भक्तिमयी मीरा एवं साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा का मेवाड़ धरा से निकट का सम्बन्ध रहा।

तेरापंथ साहित्य में यात्राओं के संबंध में बहुत कम लिखा गया है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में राष्ट्रव्यापी अणुव्रत यात्राएँ करने के साथ ही व्यापक जनसम्पर्क किया और जन–जन को जीवन मूल्यों से परिचित कराया। साध्वीप्रमुखाश्री इन यात्राओं की साक्षी रहीं। अणुव्रत यात्राओं का संकलन–लेखन–संपादन कर साध्वीप्रमुखाश्री न सिर्फ अपने धर्मपिता के ऋण से उऋण हुईं, वरन् अणुव्रत के इतिहास को भी सुरक्षित किया। आचार्य तुलसी की राष्ट्रव्यापी यात्राओं को आपने अपनी लेखनी से – आचार्य तुलसीः दक्षिण के अंचल में, जब महक उठी मरुधर माटी, बहता पानी निरमला, अमरित बरसा अरावली में, इत्यादि कृतियों में जिस मंत्रमुग्ध भावधरा के साथ अंकित किया, उसे पढ़ते हुए पाठक भी साथ में यात्रा करने को विवश हो जाता है। आचार्य तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' का आपने 25 भागों में जिस रोचकता के साथ संपादन किया है, वह तेरापंथ–अणुव्रत इतिहास की अमूल्य धरोहर है। लगता है साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने इन पुस्तकों का लेखन करते हुए अपने धर्मगुरु आचार्य तुलसी के साथ तादात्म्य स्थापित कर लिया, मीरा की तरह एकात्म हो गयीं, तभी यह स्तुति हो पायी।

मातृभूमि की महत्ता

13 सितम्बर 2000 को लाडनूं की सुधर्मा सभा में अध्यात्म विज्ञानी आचार्य महाप्रज्ञ से 'मेवाड़ पधारो' का गरिमामय निवेदन हुआ। अपनी श्रद्धामयी भाव–आरती लिये चार हजार से अधिक मेवाड़ी नर–नारी समारोह में उपस्थित थे। जैन विश्व भारती एवं लाडनूं की सड़कें मेवाड़मयी हो चली थीं। समारोह में साध्वीप्रमुखाश्री से उद्‌बोधन का अनुरोध करते हुए मैंने बाल चपलता के साथ कहा– "तेरापंथ द्विशताब्दी की ऐतिहासिक उपलब्धि हैं साध्वी प्रमुखाश्री। आपकी जन्मभूमि मेवाड़ है, आप मेवाड़ की धर्मपुत्री हैं, इसलिए अपना दायित्व निभाइए और अपने धर्मपिता से अनुरोध कीजिए कि गुरुदेव अब चलें मातृभूमि मेवाड़।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा– "जन्मभूमि का बड़ा महत्व है। यह बताने की जरूरत नहीं है। मेरा जन्म मेवाड़ की धरती पर हुआ। मेवाड़ मेरी ही नहीं, तेरापंथ की भी मातृभूमि है, अतः हम सभी की मातृभूमि है।"

अणुव्रत परिवार प्रमुखा

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को अणुव्रत परिवार प्रमुखा के संबोधन से संबोधित किया गया था। वस्तुतः वे परिवार प्रमुखा थीं। हर कार्यकर्ता और श्रावक से वे निकटता का संबंध बना उन्हें अणुव्रत, समाज का कार्य करने को प्रेरित करती थीं। उनका सपना रहा कि समाज का हर परिवार अणुव्रत जीवनशैली में ढले और गुरुदेव तुलसी का स्वस्थ समाज का सपना पूरा हो। महिलाओं के शैक्षिक–सामाजिक उन्नयन की दृष्टि से उन्होंने महिला समाज को अपने पैरों पर खड़ा कर महिलाओं में आत्मविश्वास–स्वाभिमान का नवसंचार किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी विलक्षण साधिका थीं। उन्होंने संयम व्रत का पूर्ण निष्ठा से पालन करते हुए धार्मिक एवं सामाजिक परिवर्तन की राह प्रशस्त की तथा हर व्यक्ति को वात्सल्य दिया। उनका जीवन कर्मठता और पुरुषार्थ की गाथा है। माँ स्वरूपा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को प्रणाम!

राजसमंद निवासी लेखक एमबीबीएस डॉक्टर हैं तथा अणुव्रत महासमिति में कई महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। अणुव्रत सेवी और अणुव्रत प्रवक्ता होने के साथ ही आप अणुव्रत गौरव समेत अनेक अलंकरणों से सम्मानित हैं।

विचक्षणता एवं विनम्रता की साक्षात देवी थीं

डॉ. सोहनलाल गांधी

यह विश्वास ही नहीं होता कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी अब हमारे बीच नहीं हैं। आध्यात्मिक ओज एवं सतीत्व के तेज से आलोकित उनका मुखारविंद आज भी मेरे स्मृति पटल पर रह–रह कर उभर रहा है। जब भी मैं गुरुदर्शन के लिए जाता, साध्वीप्रमुखा जी मुझे गुरुदेव तुलसी की अभूतपूर्व विरासत की याद दिलातीं और उस पर निरंतर काम करते रहने की प्रेरणा देतीं।

कोविड के लंबे व्यवधान के बाद दो माह पूर्व जयपुर अणुविभा केन्द्र में साध्वीप्रमुखा जी का पधारना हुआ। मैं दर्शन करने पहुँचा तो अस्वस्थता के बावजूद उन्होंने मुझे 15 मिनट का समय दिया। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ के विश्व शांति में योगदान की अभूतपूर्व विरासत पर अब तक हुए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने कहा कि अब जीवन का शेष समय धर्मसंघ व अणुव्रत की सेवा एवं गुरुदेव तुलसी तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ के अंतरराष्ट्रीय अभियान को व्यापक व सुदृढ़ करने में ही लगना चाहिए। साध्वीप्रमुखा जी ने गुरुदेव तुलसी की पुण्यतिथि पर राजस्थान पत्रिका में लिखे गये मेरे विशेष आलेख का उल्लेख करते हुए कहा कि समय–समय पर ऐसे लेख लिखे जाते रहने चाहिए।

साध्वीप्रमुखा जी वस्तुतः गुरुदेव तुलसी की अनुपम कृति थीं। वे पन्द्रह वर्ष की अवस्था में दुनिया से विरक्त हो गयीं और पारमार्थिक शिक्षण संस्थान में एक मुमुक्षु के रूप में प्रवेश किया। उनकी लगन, वैराग्य की भावना एवं तेरापंथ के सिद्धान्तों एवं जैन दर्शन के अंतरानुभूति बोधक्षम को ध्यान में रखते हुए आचार्य तुलसी ने उन्हें 19 वर्ष की अवस्था में श्रामण्य जीवन में दीक्षित किया।

नव दीक्षित साधु–साध्वियों की नियमित कक्षा गुरुदेव तुलसी स्वयं लेते थे। वे विद्वता के साथ–साथ चारित्रिक श्रेष्ठता एवं सरलचित्तता को बहुत महत्व देते थे। वे स्वयं श्रामण्य जीवन के नियमों का कठोरतापूर्वक पालन करते और प्रत्येक श्रमण–श्रमणी से यही अपेक्षा करते थे। उनकी दृष्टि पैनी थी जो सदैव उत्कृष्टता की तलाश में रहती। उन्हें साध्वी कनकप्रभा में वे सब गुण दिखे जो गुरुतर दायित्व को वहन कर सकें और जब वे महज 30 वर्ष की थीं, गुरुदेव तुलसी ने उन्हें तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखा मनोनीत किया। 400 से अधिक साध्वियों के आध्यात्मिक प्रशासन का उत्तरदायित्व एक युवा साध्वी को सुपुर्द करना अपने आप में एक असाधारण घटना थी।

यह वह समय था जब अणुव्रत राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित हो चुका था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि पर एक अभिनव ग्रन्थ की रचना की थी जिसने बुद्धिजीवियों में अणुव्रत की स्वीकार्यता बढ़ायी, लेकिन सामान्य नागरिकों के लिए समाजोपयोगी साहित्य का नितान्त अभाव था। उन्होंने अणुव्रत पर आधुनिक युग की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में एक प्रश्नावली तैयार की और गुरुवर्य से निवेदन किया कि वे अपने व्यस्त समय में से प्रतिदिन कुछ समय इन प्रश्नों के उत्तर लिखवाने के लिए भी प्रदान करें। गुरुवर्य ने उनका निवेदन स्वीकार कर लिया और अणुव्रत पर साध्वीप्रमुखा जी द्वारा सम्पादित दो मूल्यवान ग्रंथों का निर्माण हुआ – 1. अणुव्रत की छतरी एवं अनैतिकता की धूप 2. अणुव्रत : गति–प्रगति। साध्वीप्रमुखा जी ने जैन आगमों को प्राकृत से हिन्दी भाषा में रूपान्तरित भी किया। वे संवेदनशील कवयित्री भी थीं। उनका काव्य संग्रह 'सरगम' हिन्दी साहित्य को एक अनुपम भेंट है। उनके द्वारा रचित ग्रंथ गुरुदेव तुलसी की यात्राओं का लेखा–जोखा हैं।

राष्ट्र एवं धर्मसंघ के लिए अब भी उन्हें बहुत कुछ करना था किंतु नियति ने कुछ और ही लिखा था। वे वस्तुतः विचक्षणता एवं विनम्रता की साक्षात मूर्ति थीं। उन्हें मेरा शत शत नमन।

अणुव्रत गौरव से सम्मानित जयपुर निवासी लेखक अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष रहे हैं। अणुव्रत के अंतरराष्ट्रीय विस्तार में आपकी विशिष्ट भूमिका है।

विश्वशान्ति के लिए अणुव्रत का शंखनाद जरूरी : राज्यपाल

मुंबई। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि अणुव्रत शान्ति का शंखनाद है। आचार्य तुलसी ने द्वितीय विश्वयुद्ध की हिंसा से त्रस्त समग्र जनता के लिए अहिंसात्मक अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। आज आचार्य श्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा के द्वारा शान्ति का संदेश दे रहे हैं। तृतीय विश्व युद्ध की ओर बढ़ती मानवता को अणुव्रत शान्ति का संदेश हो सकता है। विश्वशान्ति के लिए अणुव्रत का शंखनाद जरूरी है।

राज्यपाल 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के अवसर पर 1 मार्च को राज भवन में आयोजित 'अणुव्रत का शंखनाद' कार्यक्रम में बोल रहे थे।

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई की पहल पर आयोजित कार्यक्रम में **डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार** ने कहा कि विश्व के जनमानस को अणुव्रतों को अपनाकर उत्थान की ओर अग्रसर होना है। मुनिश्री जागृत कुमार ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। अणुविभा अध्यक्ष **संचय जैन** ने अणुविभा के लोकहितकारी कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, सहमंत्री इंद्र बैगानी, संगठन मंत्री विनोद कोठारी, काव्यधारा की संयोजिका डॉ. कुसम लुनिया, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका तथा अणुविभा सदस्य डॉ. धनपत लुनिया की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन राजकुमार चपलोत ने किया। अणुव्रत समिति मुंबई की अध्यक्ष कंचन सोनी ने अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री वनिता बाफना ने आभार ज्ञापन किया।

74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में

अणुव्रत काव्यधारा

राष्ट्रीय संयोजक डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट

अणुव्रत काव्यधारा ने दिया अशांत विश्व को शांति का संदेश

अणुव्रत आंदोलन के 74वें स्थापना दिवस का मुख्य कार्यक्रम मुंबई में आयोजित

मुंबई। आचार्य तुलसी सभागार में 1 मार्च को रात्रि 8 बजे से 'अणुव्रत काव्यधारा' के रूप में आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में देश के ख्यातिप्राप्त कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया। वहीं श्रोताओं ने एक अहिंसक और शांतिप्रिय समाज के निर्माण का संकल्प व्यक्त किया। अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा आयोजित कार्यक्रम में **साध्वीश्री राकेशकुमारी** ने दुनिया में बढ़ रहे हिंसा और तनाव के माहौल में अणुव्रत दर्शन को सटीक समाधान बताया। उन्होंने कहा कि अणुव्रत सुधार की बात करता है। आचार्य तुलसी ने कहा था – सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा। **समणी डॉ. मंजुलप्रज्ञा और समणी अमृतप्रज्ञा** ने भी विचार व्यक्त किये।

अणुविभा अध्यक्ष **संचय जैन** ने बताया कि देश की आजादी के बाद महान संत आचार्य तुलसी ने भारत के नागरिकों से असली आजादी अपनाओ का आह्वान करते हुए व्यक्ति सुधार के लिए अणुव्रत की आचार संहिता प्रस्तुत की थी। बिना किसी धर्म, जाति, रंग या वर्ण भेद के कोई भी व्यक्ति इसे अपनाकर सुखपूर्ण जीवन जी सकता है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में आज यह आंदोलन संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्ध संस्था अणुविभा के तत्वावधान में देशभर में फैली 180 अणुव्रत समितियों और हजारों अणुव्रत कार्यकर्ताओं के माध्यम से संयम प्रधान अणुव्रत जीवनशैली के प्रसार में संलग्न है।

मुंबई अणुव्रत समिति की अध्यक्ष **कंचन सोनी** ने बताया कि कवियों ने अणुव्रत जीवनशैली को अपनाने के लिए अभिप्रेरित किया।

दिल्ली से समागत लोकप्रिय कवयित्री **डॉ. कीर्ति काले** ने इन पंक्तियों के साथ अपनी बात कही– *"अणुव्रत की आचार संहिता जो कोई अपनाये, छोटे–छोटे संकल्पों से बड़े लक्ष्य को पाये"।* उन्होंने गीत के माध्यम से जल की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए इसके हर एक बूँद को बचाने का संदेश दिया। जयपुर से आये वरिष्ठ कवि **इकराम राजस्थानी** ने *"खड़ा हुआ है विश्व में, ले अपनी पहचान। एटम बम के सामने, अणुव्रत सीना तान।।"* समेत अन्य रचनाओं से दाद बटोरी। शाहपुरा के गीतकार और पैरोडीकार **डॉ. कैलाश मंडेला** ने *"संयम अनुशासन के बल पर जो, बदले युग की धारा। अणुव्रत संदेश हमारा"* सुनाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

खचाखच भरे सभागार में देर रात तक चले कार्यक्रम में हास्य कवि और व्यंग्यकार **गौरव शर्मा** और **मुन्ना बैटरी** ने अपने व्यंग्यों से समाज में बढ़ रही विद्रूपताओं पर कटाक्ष किया और प्रामाणिक जीवन जीने का आह्वान किया। सभी कवियों का अणुव्रत अंगवस्त्र व प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया। **अणुव्रत सेल्फी प्वाइंट** भी अतिथियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री और अणुव्रत काव्यधारा की राष्ट्रीय संयोजक **डॉ. कुसुम लुनिया** ने और आभार ज्ञापन मुंबई समिति मंत्री **वनिता बाफना** ने किया।

इस अवसर पर *विधायक अतुल पाथलकर, नगरसेवक शिवकुमार झा, नगरसेवक संदीप माने, विनोदजी शेलार मुंबई उपाध्यक्ष बीजेपी, दक्षा पटेल नगर सेविका, कुशल गड़ियां राजस्थानी बीजेपी, पत्रकार नरेश आमेटा, युवराज सिंह, अभिनेता दया शंकर पांडे, गायक कलाकार विराग मालती, अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, संगठन मंत्री विनोद कोठारी, सहमंत्री इंद्र बेंगानी, न्यासी गणेश कच्छारा, महाराष्ट्र राज्य प्रभारी एवं कार्यक्रम संयोजक रमेश धोका के साथ ही रमेश सोनी, राजेश चौधरी, धनपत लुनिया, नीरज बंबोली, अणुव्रत समिति मुंबई की कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया* सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।

74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में फैली अणुव्रत समितियों ने अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया। *विस्तृत रिपोर्ट आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।*

स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के आह्वान पर देशभर में फैली अणुव्रत समितियों ने "स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली" अभियान के तहत आमजन से ईको फ्रेंडली होली का आह्वान किया। अभियान के राष्ट्रीय संयोजक संजय जैन ने बताया कि अणुव्रत समितियों ने इसके तहत बैनर, पोस्टर, पैंफलेट आदि के माध्यम से लोगों को पानी का कम से कम उपयोग करने, केमिकल युक्त रंगों के प्रयोग से बचने, प्राकृतिक गुलाल का उपयोग करने तथा होली खेलने के दौरान गरिमापूर्ण व्यवहार रखने की अपील के साथ ही आपसी मैत्री और सद्भाव बढ़ाने का आग्रह किया। प्रस्तुत हैं चित्रमयी झलकियाँ :

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
ईको-फ्रेंडली होली
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली

अभिभावकों के लिये निर्देश
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली
संयम ही जीवन है...
अणुव्रत समिति, दिवेर

प्रवेश वर्जित है।
अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली
संयम ही जीवन है...
अणुव्रत समिति

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
ईको-फ्रेंडली होली
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली
संयम ही जीवन है...
अणुव्रत समिति
जोधपुर

KAUTILYA
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली
संयम ही जीवन है...
अणुव्रत समिति
जयपुर

अभिभावकों के लिये निर्देश
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली

स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
स्वस्थ होली, सद्भाव की रंगोली
संयम ही जीवन है...

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण षष्ठीपूर्ति वर्ष के

ऐतिहासिक उपलक्ष्य में अणुव्रत पत्रिका की रचनात्मक भेंट

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक

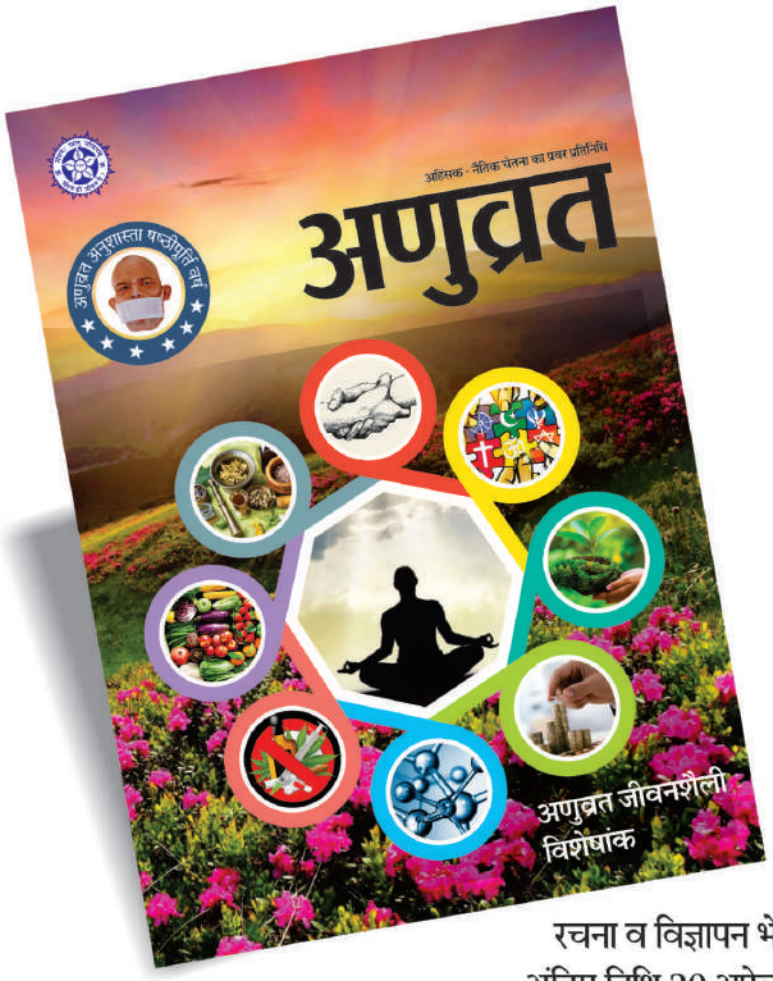

समस्याएं अनेक - समाधान एक
अणुव्रत जीवनशैली

रचना व विज्ञापन भेजने की
अंतिम तिथि 20 अप्रेल 2022

विषय

अणुव्रत अनुशास्ता : व्यक्तित्व व कर्तृत्व

अणुव्रत जीवनशैली : खाद्य संयम, प्राकृतिक चिकित्सा, भाषा संयम, ध्यान साधना, प्रामाणिकता, परमार्थ की चेतना, सांप्रदायिक सौहार्द, शाकाहार, व्यसन मुक्ति, मौन साधना, व्यवहार संयम, अर्जन के साथ विसर्जन, संग्रह की सीमा, बुद्धि - भावना संतुलन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रकृति प्रेम, मानवीय मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य

रचना भेजने हेतु संपर्क सूत्र

संचय जैन, सम्पादक +91-9829052452

मोहन मंगलम, सह संपादक +91- 94142-73749

मनीष सोनी, कार्यालय प्रभारी +91-91166-34512

विज्ञापन हेतु सम्पर्क सूत्र

कन्हैया लाल चिप्पड़, संगठन मंत्री (दक्षिणांचल) +919741413853
राकेश मालू, संगठन मंत्री (पूर्वांचल) +918617843739
संजय जैन, संगठन मंत्री (मध्यांचल) +919215517430
शांतिलाल पटावरी, संयोजक पत्रिका प्रसार +919811242365
विनोद कोठारी, संगठन मंत्री (पश्चिमांचल) +919892108601
कुसुम लुनिया, संगठन मंत्री (उत्तरांचल) +919891947000
इन्द्र बैंगानी, सहमंत्री +919810352341
बजरंग बैद, सह संयोजक पत्रिका प्रसार + 917002322503

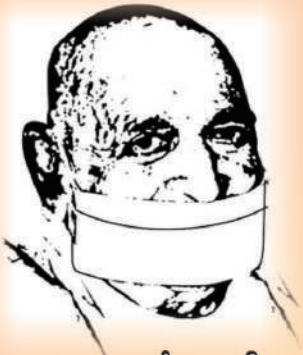

आचार्य तुलसी

आधार पुस्तक

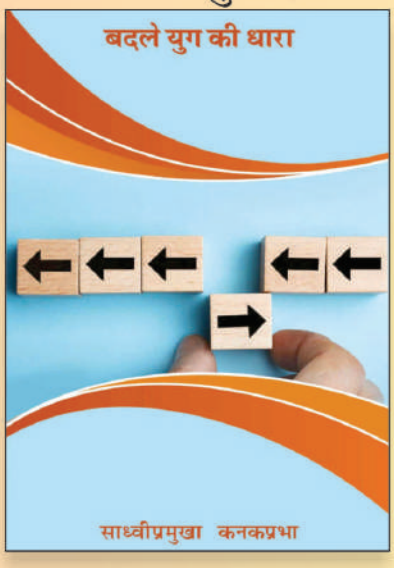

बदले युग की धारा

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2022

बदले युग की धारा – अणुव्रत के सिद्धांतों को व्याख्यायित करने वाली साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी कृत एक विशिष्ट पुस्तक है। इसका स्वाध्याय पाठकों को अणुव्रत के दर्शन को समझने का सहज अवसर प्रदान करेगा। इस दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

आधार पुस्तक

बदले युग की धारा

प्रतियोगिता प्रारंभ

अप्रैल, 2022

कुल पुरस्कार-सम्मान

₹ 2,21,000

:: आयोजक ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

:: निवेदक ::

संचय जैन	भीखम सुराणा	अशोक चोरड़िया
अध्यक्ष, अणुविभा	महामंत्री, अणुविभा	संयोजक

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
April, 2022

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/03/2022
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

संयमः खलु जीवनम्

संयम ही जीवन है।

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST

प्रतियोगिताएं

लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण

विषय

पर्यावरण का संरक्षण दायित्व हमारा हर क्षण

स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता के प्रथम चरण की अंतिम तारीख

31 जुलाई, 2022

राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार

ग्रुप-1: कक्षा 3-5, ग्रुप -2: कक्षा 6-8, ग्रुप-3: कक्षा 9-12

अधिक जानकारी के लिए

https://anuvibha.org/acc
acc@anuvibha.org
+91-91166-34514

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुविभा

सहयोगी प्रकल्प

जीवन विज्ञान | बच्चों का देश

मुख्य सौजन्यकर्ता

LODHA IMPEX JAIPUR

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**